केंद्रीय विद्यालय संगठन भोपाल संभाग

विद्यार्थी अध्ययन सामग्री

कक्षा – बारहवीं

विषय – हिंदी आधार

प्रेरणा

डॉ. आर. सेंदिल कुमार
उपायुक्त, के.वि.सं. भोपाल संभाग

श्री विजय वीर सिंह
सहायक आयुक्त

श्रीमती किरण मिश्रा
सहायक आयुक्त

श्रीमती निर्मला बुडानिया
सहायक आयुक्त

मार्गदर्शन

श्री आर. एन. पाण्डेय
प्राचार्य, पीएम श्री के.वि. बैतूल

संकलन लेखन एवं संपादन

अभिषेक कुमार जैन
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्र. 1 आ.नि. इटारसी

आरोह पाठ्यपुस्तक

(प्रस्तुत खंड में से 2*2 और 2*3 इस तरह कुल मिलाकर 16 अंकों के प्रश्न पूछे जाएंगे)

(गद्य खंड)

पाठ 1

भक्तिन (लेखिका महादेवी वर्मा)

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

उत्तर. भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था जो समृद्धि और ऐश्वर्य का प्रतीक होता है परंतु इस नामे के साथ उसके जीवन का मेल नहीं था । भक्तिन एक गरीब महिला थी। लोग उसके इस नाम को सुनकर उसकी हँसी न उड़ाएँ इसलिए वह अपना वास्तविक नाम छिपाती थी। वह धनहीन थी लेकिन वह बहुत समझदार थी। भक्तिन को यह नाम लेखिका ने उसकी वेशभूषा देखकर दिया था उसके गले में कंठी-माला व मुँड़े हुए सिर से वह भक्तिन ही लग रही थी।

प्रश्न 2. दो कन्या रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जेठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है? क्यों इससे आप सहमत हैं?

उत्तर. हाँ, हम इस बात से पूर्णतः सहमत हैं कि दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जेठानियों द्वारा घृणा और उपेक्षा का शिकार बनी। समाज में प्रायः देखा जाता है कि पुरुष की अपेक्षा स्त्री ही स्त्री से घृणा और ईर्ष्या भाव रखती है। अपनी कुंठित और संकीर्ण मानसिकता के कारण स्त्री ही संसार में जन्म लेने वाली कन्या की उपेक्षा करती है। भक्तिन ने जब दो पुत्रियों को जन्म दिया तो उसकी जेठानियों ने उस पर बहुत जुल्म ढाए। उसकी जेठानियों ने तो जमीन हड़पने के लिए भक्तिन की विधवा बेटी से अपने भाई का विवाह करने की योजना बनाई, जब यह योजना नहीं सफल हुई तो भक्तिन पर अत्याचार बढ़ते गए।

प्रश्न 3. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उत्तर. भारतीय समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। सदियों से नारी इसी सामाजिक परंपरा की शिकार रही है। सदा से स्त्रियाँ परिवार और समाज के दबाव के आगे अपनी इच्छा दबी रह जाती है। भक्तिन

की विधवा बेटी के साथ उसके ताऊ के लड़के के साले ने जबरदस्ती करने की कोशिश की। लड़की ने उसकी खूब पिटाई की, परंतु पंचायत ने अपीलहीन फ़ैसले में उसे तीतरबाज युवक के साथ रहने का फ़ैसला सुनाया जिसे लड़की को ना चाहकर भी स्वीकार करना पड़ा। यह सरासर स्त्री के मानवाधिकारों का हनन है। ऐसे और भी अनेक उदाहरण हैं जिसमें स्त्री को विवाह के संदर्भ में अपना मन मारकर रह जाना पड़ा।

प्रश्न 4. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर. भक्तिन में सादगी, स्वामिभक्ति आदि अनेक गुण विद्यमान थे, लेकिन इसके साथ ही उसमें अनेक अवगुण भी थे। लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि कभी-कभी भक्तिन उसके घर में इधर-उधर पड़े पैसों को भंडारघर की मटकी में छिपा देती थी। लेखिका जब उससे पूछती तो वह तर्क-वितर्क करती हुई उसे चोरी मानने से इंकार करती और कहती उसने पैसे संभाल कर रख दिए हैं। साथ ही भक्तिन पुरानी मान्यताओं को अधिक महत्त्व देती थी और अपनी गलती कभी भी स्वीकार नहीं करती थी । लेखिका के द्वारा पढ़ने-लिखने की बात करने पर वह हमेशा उस बात को बहाना बनाकर टाल देती ।

प्रश्न 5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर. लेखिका को स्त्रियों का सिर मुंडवाना अच्छा नहीं लगता था। उसने भक्तिन को ऐसा करने से रोकना चाहा किंतु उसने शास्त्र का उदाहरण देते हुए कहा कि **'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध'** अर्थात् सिद्ध लोग सिर मुंडवाकर तीर्थ को गए। लेखिका ने हारकर भक्तिन को सिर घुटाने से नहीं रोक सकी तथा हर बृहस्पतिवार को उसका मुंडन होता रहा।

प्रश्न 6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?

उत्तर. भक्तिन के आ जाने के बाद महादेवी को देहात की संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि का ज्ञान हो गया क्योंकि भक्तिन के अंदर दूसरों को बदल देने के गुण भरपूर मात्रा में विद्यमान थे। भक्तिन ने भोजन में मीठा बनाना बंद कर दिया। वह गाढ़ी दाल, मोटी रोटी, मकई की लपसी, ज्वार के भुने हुए, भुट्टे के हरे-हरे दाने की खिचड़ी, बाजरे के तिल वाले ठंढे पुए आदि बनाती। महादेवी वर्मा बार-बार प्रयास करके भी उसके स्वभाव को परिवर्तित नहीं कर पायीं और धीरे-धीरे उनका स्वाद बदल गया। इसलिए भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई।

पाठ 2

बाज़ार दर्शन (जैनेंद्र कुमार)

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

उत्तर. बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं –

- बाजार में आकर्षक वस्तुएँ देखकर मनुष्य उनके जादू में बँध जाता है।

- उसे उन वस्तुओं की कमी खलने लगती है।
- वह उन वस्तुओं को जरूरत न होने पर भी खरीदने के लिए विवश होता है।
- वस्तुएँ खरीदने पर उसका अहंकार संतुष्ट हो जाता है।
- खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि जो चीजें आराम के लिए खरीदी थीं वे खलल डालती हैं।
- उसे खरीदी हुई वस्तुएँ अनावश्यक लगती हैं।

प्रश्न 2. बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आता है? क्या आपकी नज़र में उनको आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

उत्तर. भगत जी समर्पण भी भावना से ओतप्रोत हैं। धन संचय में उनकी बिलकुल रुचि नहीं है। वे संतोषी स्वभाव के आदमी हैं। उन्हें बाजार में उसी व्यक्ति के प्रति अनुराग है जो उनके लिए आवश्यक है । बाजार को देखते हुए भी उसके आकर्षण में नहीं फंसते । यदि प्रत्येक व्यक्ति भगतजी की तरह आचरण करे तो समाज से भ्रष्टाचार, गरीबी, आर्थिक असमानता आदि बुराइयाँ शीघ्र ही समाप्त हो जाएँगी । भगतजी जैसे व्यक्ति ही समाज में प्रेम और सौहार्द का संदेश फैलाते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति समाज में शांति स्थापित करने में मददगार साबित होते हैं।

प्रश्न 3. 'बाज़ारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें हैं?

उत्तर. 'बाजारूपन' से तात्पर्य है-दिखावे के लिए बाजार का उपयोग और बाजार में छल-कपट का बढ़ना । जब व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार नहीं बल्कि अपनी क्रय शक्ति के अनुपात में वस्तुएँ खरीदता है, तो बाजार में छल व कपट से निरर्थक वस्तुओं की खरीदफ़रोख्त, दिखावे व ताकत के आधार पर होने लगती है तो बाजार का बाजारूपन बढ़ जाता है। वे व्यक्ति जो अपनी आवश्यकता के बारे में निश्चित होते हैं, बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। बाजार का कार्य मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है।

प्रश्न 4. बाज़ार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, वह देखता है सिर्फ उसकी क्रय शक्ति को। इसे रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर. यह बात बिलकुल सत्य है कि बाजारवाद ने कभी किसी को लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र के आधार पर नहीं देखा। उसने केवल व्यक्ति के खरीदने की शक्ति को देखा है। जो व्यक्ति सामान खरीद सकता है वह बाजार में सर्वश्रेष्ठ है। कहने का आशय यही है कि उपभोक्तावादी संस्कृति ने सामाजिक समता स्थापित की है। यही आज का बाजारवाद है। **पाठ 3**

काले मेघा पानी दे (धर्मवीर भारती)

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. लोगों ने लड़कों की टोली की मेढक-मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी ?

उत्तर. गाँव के कुछ लोगों को लड़कों के नंगे शरीर, उछल-कूद, शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ से चिढ़ थी। वे इसे अंधविश्वास मानते थे। इसी कारण वे इन लड़कों की टोली को मेढक-मंडली कहते थे। यह टोली स्वयं को 'इंदर सेना' कहकर बुलाती थी। ये बच्चे इकट्ठे होकर भगवान इंद्र से वर्षा करने की गुहार लगाते थे। बच्चों का मानना था कि वे इंद्र की सेना के सैनिक हैं तथा उसी के लिए लोगों से पानी माँगते हैं ताकि इंद्र बादलों के रूप में बरसकर सबको पानी दें।

प्रश्न 2. जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर. यद्यपि लेखक बच्चों की टोली पर पानी फेंके जाने के विरुद्ध था लेकिन उसकी जीजी (दीदी) इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अंधविश्वास नहीं है। यदि हम इस सेना को पानी नहीं देंगे तो इंदर हमें कैसे पानी देगा अर्थात् वर्षा करेगा। यदि परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे कुछ देना सीखो। तभी परमात्मा खुश होकर मनुष्यों की इच्छाएँ पूरी करता है।

प्रश्न 3.पानी दे, गुड़धानी दे मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है?

उत्तर. गुड़धानी गुड़ व अनाज के मिश्रण से बने खाद्य पदार्थ को कहते हैं। बच्चे मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग करते हैं। पानी से प्यास बुझती है, साथ ही अच्छी वर्षा से ईख व धान भी उत्पन्न होता है, यहाँ 'गुड़धानी' से अभिप्राय अनाज से है। गाँव की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित होती है जो वर्षा पर निर्भर है। अच्छी वर्षा से अच्छी फसल होती है जिससे लोगों का पेट भरता है और चारों तरफ खुशहाली छा जाती है।

प्रश्न 4. गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है?

उत्तर. इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात इसलिए मुखरित हुई है कि एक तो वर्षा नहीं हो रही। दूसरे जो थोड़ा बहुत पानी गगरी (घड़े) में बचा था। वह भी घड़े के टूटने से गिर गया। अब घड़े में भी कुछ पानी नहीं बचा। इसलिए बैल प्यासे रह गए। बैल तभी खेत-जोत सकेंगे जब उनकी प्यास बुझेगी। हे मेघा! इसलिए पानी बरसा ताकि बैलों और धरती दोनों की प्यास बुझ जाए! चारों ओर खुशी छा जाए।

प्रश्न 5.इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्त्व है?

उत्तर. वर्षा न होने पर इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है। इसका कारण यह है कि भारतीय जनमानस में गंगा और अन्य नदियों को विशेष मान-सम्मान प्राप्त है। हर शुभ कार्य में गंगाजल का प्रयोग होता है। उसे 'माँ' का दर्जा मिला है। भारत के सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में नदियों का बहुत महत्त्व है। देश के लगभग सभी प्रमुख बड़े नगर नदियों के किनारे बसे हुए हैं। इन्हीं के किनारे सभ्यता का विकास हुआ। अधिकतर धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र भी नदी-तट पर ही विकसित हुए हैं। हरिद्वार, ऋषिकेश, काशी, बनारस, आगरा आदि शहर नदियों के तट पर बसे हैं। धर्म से भी नदियों का प्रत्यक्ष संबंध है। नदियों के किनारों पर मेले लगते हैं। नदियों को मोक्षदायिनी माना जाता है।

प्रश्न 6.रिश्तों में हमारी भावना-शक्ति बँट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमज़ोर करती है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।

उत्तर. लेखक का अपनी जीजी के प्रति गहरा प्यार था। वह अपनी जीजी को बहुत मानता था। दोनों में भावनात्मक संबंध बहुत गहरा था। लेखक जिस परंपरा का या अंधविश्वास का विरोध करता है जीजी उसी का भरपूर समर्थन करती है। धीरे-धीरे लेखक और उसकी जीजी के बीच की भावनात्मक शक्ति बँटती चली जाती हैं। लेखक का विश्वास डगमगाने लगता है। वह कहता भी है कि मेरे विश्वास का किला ढहने लगा था। उसकी जीजी लेखक की बुधि शक्ति को भावनात्मक रिश्तों से कमजोर कर देती है। इसलिए लेखक चाहकर भी किसी बात का विरोध नहीं कर पाता । यद्यपि वह विरोध जताने का प्रयास करता है लेकिन अंत में उसे जीजी के आगे समर्पण करना पड़ता है।

पाठ 4

पहलवान की ढोलक (फणीश्वरनाथ रेणु)

प्रश्न 1.कुश्ती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज़ आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तर. कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में अद्‌भुत तालमेल था। ढोल बजते ही लुट्टन की रगों में खून दौड़ने लगता था। उसे हर थाप में नए दाँव-पेंच सुनाई पड़ते थे। ढोल की आवाज उसे साहस प्रदान करती थी। ढोलक की विभिन्न आवाजें सुनकर उसे ऐसा लगता मानो ढोलक उससे अलग-अलग दाँव लगाने को कह रहा हो । नीचे ढोलक की आवाज और लुट्टन के दाँव की समानता बताने वाले कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -

- धाक-धिना, तिरकट तिना - दाँव काटो, बाहर हो जाओ।
- चटाक्र-चट्-धा - उठा पटक दे।
- धिना-धिना, धिक-धिना – चित करो, चित करो।
- ढाक्र-ढिना - वाह पट्ठे।
- चट्-गिड-धा - मत डरना।

ये ध्वन्यात्मक शब्द हमारे मन में भी उत्साह का संचार करते हैं।

प्रश्न 2. कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर. लुट्न पहलवान का जीवन उतार-चढ़ावों से भरपूर रहा। जीवन के हर दुख-सुख से उसे दो-चार होना पड़ा। बचपन में ही उसके माता-पिता का देहांत हो गया था, तब उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया । पहलवानी सीखने के बाद उसने चाँदसिंह पहलवान को हराकर राजकीय पहलवान का दर्जा प्राप्त किया। फिर काला खाँ को भी परास्त कर अपनी धाक आसपास के गाँवों में स्थापित कर ली। वह पंद्रह वर्षों तक अजेय पहलवान रहा। अपने दोनों बेटों को भी उसने राजाश्रित पहलवान बना दिया। राजा के मरते ही उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। विलायत से राजकुमार ने आते ही पहलवान

और उसके दोनों बेटों को राजदरबार से अवकाश दे दिए। गाँव में फैली बीमारी के कारण एक दिन दोनों बेटे चल बसे। एक दिन पहलवान भी चल बसा । इस प्रकार दूसरों को जीवन संदेश देने वाला पहलवान स्वयं खामोश हो गया।

प्रश्न 3. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?

उत्तर. पहलवान ने ढोल को अपना गुरु माना और एकलव्य की भाँति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। जब दंगल में जनमत और राजमत चाँदसिंह के पक्ष में था तब केवल ढोलक की आवाज सुनकर ही लुट्टन ने चाँदसिंह को हरा दिया था । ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राज-दरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजा-बजाकर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों-लड़कों को शिक्षा दी, कुश्ती के गुर सिखाए। ढोल से ही उसने गाँव वालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख दिलेरी से सहन किया और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवन-साथी ही था।

प्रश्न 4. गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर. ढोलक की आवाज़ सुनकर लोगों में जीने की इच्छा जाग उठती थी। पहलवान नहीं चाहता था कि उसके गाँव का कोई आदमी अपने संबंधी की मौत पर मायूस हो जाए। इसलिए वह ढोल बजाता रहा। वास्तव में ढोल बजाकर पहलवान ने अन्य ग्रामीणों को जीने की कला सिखाई। साथ ही अपने बेटों की अकाल मृत्यु के दुख को भी वह कम करना चाहता था।

प्रश्न 5. ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था।

अथवा

पहलवान की ढोलक की उठती गिरती आवाज़ बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है?

उत्तर. महामारी की त्रासदी से जूझते हुए ग्रामीणों को ढोलक की आवाज संजीवनी शक्ति की तरह मौत से लड़ने की प्रेरणा देती थी। यह आवाज बूढ़े-बच्चों व जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी। उनकी स्पंदन शक्ति से शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। ठीक है कि ढोलक की आवाज में बुखार को दूर करने की ताकत न थी, पर उसे सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आँखें मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। उस समय वे मृत्यु से नहीं डरते थे। इस प्रकार ढोलक की आवाज गाँव वालों को मृत्यु से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

प्रश्न 6. महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर. महामारी ने सारे गाँव को बुरी तरह से प्रभावित किया था। लोग सूर्योदय होते ही अपने मृत संबंधियों की लाशें उठाकर गाँव के श्मशान की ओर जाते थे ताकि उनका अंतिम संस्कार किया जा सके। सूर्यास्त होते ही सारे गाँव में मातम छा जाता था। लोगों में घोर निराशा छा जाती । यहाँ तक कि

मरते हुए पुत्र को माँ 'बेटा' कहकर भी न पुकार पाती । किसी न किसी बच्चे, बूढ़े अथवा जवान के मरने की खबर आग की तरह फैल जाती थी। सारा गाँव श्मशान घाट बन चुका था।

प्रश्न 7. कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा

विशेष सम्मान दिया जाता था।

(क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है?

(ख) इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है?

(ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

उत्तर. (क) कुश्ती या दंगल पहले लोगों व राजाओं के प्रिय शौक हुआ करते थे। राजा पहलवानों को सम्मान देते थे, परंतु आज स्थिति बदल गई है। अब पहले की तरह राजा नहीं रहे। दूसरे, मनोरंजन के अनेक साधन प्रचलित हो गए हैं।

(ख) कुश्ती की जगह अब अनेक आधुनिक खेल प्रचलन में हैं; जैसे-क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, टेनिस, शतरंज, फुटबॉल आदि।

(ग) कुश्ती को फिर से लोकप्रिय बनाने के लिए ग्रामीण स्तर पर कुश्ती की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा सकती साथ-साथ पहलवानों को उचित प्रशिक्षण तथा कुश्ती को बढ़ावा देने हेतु मीडिया का सहयोग लिया जा सकता है।

प्रश्न 8.आशय स्पष्ट करें । आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

उत्तर. लेखक ने इस कहानी में कई जगह प्रकृति का मानवीकरण किया है। यह गद्यांश भी प्रकृति का मानवीकरण ही है। यहाँ लेखक के कहने का आशय है कि जब सारा गाँव मातम और सिसकियों में डूबा हुआ था तो आकाश के तारे भी गाँव की दुर्दशा पर आँसू बहाते प्रतीत होते हैं। क्योंकि आकाश में चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। यदि कोई तारा अपने मंडल से टूटकर पृथ्वी पर फैले दुख को बाँटने आता भी था तो वह रास्ते में विलीन (नष्ट) हो जाता था। अर्थात् वह पृथ्वी तक पहुँच नहीं पाता था। अन्य सभी तारे उसकी इस भावना को नहीं समझते थे। वे तो केवल उसका मजाक उड़ाते थे और उस पर हँस देते थे।

प्रश्न 9.पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पाठ में ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. मानवीकरण के अंश -

अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।

आशय–रात का मानवीकरण किया गया है। ठंड में ओस रात के आँसू जैसे प्रतीत होते हैं। वे ऐसे लगते हैं मानो गाँव वालों की पीड़ा पर रात आँसू बहा रही है।

तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

आशय–तारों को हँसते हुए दिखाकर उनका मानवीकरण किया गया है। वे मजाक उड़ाते प्रतीत होते हैं।

ढोलक लुढ़की पड़ी थी।

आशय–यहाँ पहलवान की मृत्यु का वर्णन है। पहलवान व ढोलक का गहरा संबंध है। ढोलक का बजना पहलवान के जीवन का पर्याय है।

पाठ 5

शिरीष के फूल (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

प्रश्न 1. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है

अथवा

शिरीष को 'अद्‌भुत अवधूत' क्यों कहा गया है?

उत्तर. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है। अवधूत वह संन्यासी होता है जो विषय–वासनाओं से ऊपर उठ जाता है, सुख–दुख हर स्थिति में सहज भाव से प्रसन्न रहता है तथा फलता–फूलता है। वह कठिन परिस्थितियों में भी जीवन–रस बनाए रखता है। इसी तरह शिरीष का वृक्ष है। वह भयंकर गरमी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है। वसंत में वह लहक उठता है तथा भादों मास तक फलता–फूलता रहता है। उसका पूरा शरीर फूलों से लदा रहता है। उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, तब भी शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है, वह काल व समय को जीतकर लहलहाता रहता है।

प्रश्न 2. हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी–कभी जरूरी हो जाती है – प्रस्तुत पीठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर. परवर्ती कवि ये समझते रहे कि शिरीष के फूलों में सब कुछ कोमल है अर्थात् वह तो कोमलता का आगार हैं लेकिन विवेदी जी कहते हैं कि शिरीष के फूलों में कोमलता तो होती है लेकिन उनका व्यवहार (फल) बहुत कठोर होता है। अर्थात् वह हृदय से तो कोमल है किंतु व्यवहार से कठोर है। हम वर्तमान समय में भी देखते हैं कि हर कई बाफ्र हृदय की कोमलता और सरलता का दुर्जन अनुचित लाभ उठाते हैं । अतः हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार का कठोर होना अनिवार्य हो जाता है।

प्रश्न 3. द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

उत्तर. द्रविवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन–स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। शिरीष का वृक्ष भयंकर गरमी सहता है, फिर भी सरस रहता है।

उमस और लू में भी वह फूलों से लदा रहता है। इसी तरह जीवन में चाहे जितनी भी कठिनाइयाँ आएँ मनुष्य को सदैव संघर्ष करते रहना चाहिए। उसे हार नहीं माननी चाहिए। भ्रष्टाचार, अत्याचार, दंगे, लूटपाट के बावजूद उसे निराश नहीं होना चाहिए तथा प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाते रहना चाहिए।

प्रश्न 4. हाय, वह अवधूत आज कहाँ है! ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देहबल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

उत्तर. लेखक कहता है कि आज शिरीष जैसे अवधूत नहीं रहे। जब-जब वह शिरीष को देखता है तब-तब उसके मन में 'हूक-सी' उठती है। वह कहता है कि प्रेरणादायी और आत्मविश्वास रखने वाले अब नहीं रहे। अब तो केवल देह को प्राथमिकता देने वाले लोग रह रहे हैं। उनमें आत्मविश्वास बिलकुल नहीं है। वे शरीर को महत्त्व देते हैं, आत्मिक शक्ति को नहीं। इसीलिए लेखक ने शिरीष के माध्यम से वर्तमान सभ्यता का वर्णन किया है।

प्रश्न 5. कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थित प्रज्ञता और विदग्ध प्रेम का हृदय एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्य कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तारपूर्वक समझाइए।

उत्तर. लेखक का मानना है कि उत्तम कवि बनने के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय का होना आवश्यक है। उनका कहना है कि महान कवि वही बन सकता है जो अनासक्त योगी की तरह स्थिर-प्रज्ञ तथा विदग्ध प्रेमी की तरह सहृदय हो। केवल छंद बना लेने से कवि तो हो सकता है, किंतु महाकवि नहीं हो सकता। संसार की अधिकतर सरस रचनाएँ अवधूतों के मुँह से ही निकलती हैं। लेखक कबीर व कालिदास को महान मानता है क्योंकि उनमें अनासक्ति का भाव है। जो व्यक्ति शिरीष के समान मस्त, बेपरवाह, फक्कड़, किंतु सरस व मादक है, वही महान कवि बन सकता है। सौंदर्य की परख एक सच्चा प्रेमी ही कर सकता है। वह केवल आनंद की अनुभूति के लिए सौंदर्य की उपासना करता है। कालिदास में यह गुण भी विद्यमान था।

प्रश्न 6. सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर. परिवर्तन प्रकृति का नियम है। मनुष्य को समयानुसार परिवर्तन करते रहना चाहिए। एक ही लीक पर चलने वाला व्यक्ति पिछड़ जाता है। शिरीष के फूल हमें यही सिखाते हैं। वह हर मौसम में अपने को और अपने स्वभाव को बदल लेता है। इसी कारण वह निर्लिप्त भाव से वसंत, आषाढ़ और भादों में खिला रहता है। प्रचंड लू और उमस को सहन करता है। लेकिन फिर भी खिला रहता है। फूलों के माध्यम से कोमल व्यवहार करता है तो फलों के माध्यम से कठोर व्यवहार। इसीलिए वह दीर्घजीवी बन जाता है। मनुष्य को भी ऐसा ही करना चाहिए।

प्रश्न 7. आशय स्पष्ट कीजिए

(क) दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा पाएँगे। भोले हैं वे। हिलते डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हैं। जमे कि मरे।

(ख) जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?...मैं कहता हूँ कि कवि बनना है मेरे दोस्तों, तो फक्कड़ बनो।

(ग) फल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अंगुली है। वह इशारा है।

उत्तर. (क) लेखक कहता है कि संसार में जीवनी शक्ति और सब जगह समाई कालरूपी अग्नि में निरंतर संघर्ष चलता रहता है। बुद्धिमान निरंतर संघर्ष करते हुए जीवनयापन करते हैं। संसार में मूर्ख व्यक्ति यह समझते हैं कि वे जहाँ हैं, वहीं देर तक डटे रहेंगे तो कालदेवता की नजर से बच जाएँगे। वे भोले हैं। उन्हें यह नहीं पता कि एक जगह बैठे रहने से मनुष्य का विनाश हो जाता है। लेखक गतिशीलता को ही जीवन मानता है। जो व्यक्ति हिलते-डुलते रहते हैं, स्थान बदलते रहते हैं तथा प्रगति की ओर बढ़ते रहते हैं, वे ही मृत्यु से बच सकते हैं। लेखक जड़ता को मृत्यु के समान मानता है तथा गतिशीलता को जीवन।

(ख) लेखक कहता है कि कवि को सबसे पहले अनासक्त होना चाहिए अर्थात तटस्थ भाव से निरीक्षण करने वाला होना चाहिए। उसे फक्कड़ होना चाहिए अर्थात उसे सांसारिक आकर्षणों से दूर रहना चाहिए। जो अपने किए कार्यों का लेखा-जोखा करता है और हानि-लाभ को देखकर कविताएँ लिखता है, वह कवि नहीं बन सकता। लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है, उसे फक्कड़ बनना चाहिए।

(ग) लेखक कहता है कि फल व पेड़-दोनों का अपना अस्तित्व है। वे अपने-आप में समाप्त नहीं होते। जीवन अनंत है। फल व पेड़, वे किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई औगुली हैं। यह संकेत है कि जीवन में अभी बहुत कुछ है। सुंदरता व सृजन की सीमा नहीं है। हर युग में सौंदर्य व रचना का स्वरूप अलग हो जाता है।

पाठ 6

श्रम विभाजन और जाति प्रथा

मेरी कल्पना का आदर्श समाज (डॉ. भीमराव अंबेडकर)

प्रश्न 1.जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

उत्तर. जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं –

- जाति-प्रथा, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन भी करती है।
- सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है, परंतु श्रमिकों के विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन किसी अन्य देश में नहीं है।

- भारत की जाति-प्रथा में श्रम-विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं होता। वह मनुष्य की क्षमता या प्रशिक्षण को दरकिनार करके जन्म पर आधारित पेशा निर्धारित करती है।

प्रश्न 2. जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर. जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है क्योंकि उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है।ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य को पेशा न बदलने की स्वतंत्रता न हो तो भुखमरी व बेरोजगारी बढ़ती है। जातिप्रथा किसी भी व्यक्ति को पैतृक पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। आज यह स्थिति नहीं है। सरकारी कानून, समाज सुधार व शिक्षा के कारण जाति प्रथा के बंधन कमजोर हुए हैं। पेशे संबंधी बंधन समाप्त प्राय है। यदि व्यक्ति अपना पेशा बदलना चाहे तो जाति बाधक नहीं है।

प्रश्न 3. लेखक के मत से दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर. लेखक के मत से 'दासता' से अभिप्राय केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। दासता की व्यापक परिभाषा है-किसी व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना। इसका सीधा अर्थ है-उसे दासता में जकड़कर रखना। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

प्रश्न 4. शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर. शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर समता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह इसलिए करते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए। वे शारीरिक वंश परंपरा व सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर असमान व्यवहार को अनुचित मानते हैं। उनका मानना है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है। तो उसे समाज के सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर व समान व्यवहार उपलब्ध करवाने चाहिए। राजनीतिज्ञों को भी सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिए। समान व्यवहार और स्वतंत्रता को सिद्धांत ही समता का प्रतिरूप है। सामाजिक उत्थान के लिए समता का होना अनिवार्य हैं।

प्रश्न 5. सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर. हम लेखक की बात से सहमत हैं। उन्होंने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। भावनात्मक समत्व तभी आ सकता है जब समान भौतिक स्थितियाँ व जीवन-सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। समाज में जाति-प्रथा का उन्मूलन समता का भाव होने से ही हो सकता है। मनुष्य की महानता उसके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप होनी चाहिए। मनुष्य के प्रयासों का मूल्यांकन भी तभी हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले। जातिवाद का उन्मूलन करने के बाद हर व्यक्ति को समान भौतिक सुविधाएँ मिलें तो उनका विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं।

प्रश्न 6.आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेंगी?

उत्तर. लेखक ने अपने आदर्श समाज में भ्रातृता के अंतर्गत स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। भ्रातृता से अभिप्राय भाईचारे की भावना अथवा विश्व बंधुत्व की भावना से है। जब यह भावना किसी व्यक्ति विशेष या लिंग विशेष की है ही नहीं तो स्त्रियाँ स्वाभाविक रूप से इसमें सम्मिलित हो जाती हैं। आखिर स्त्री का स्त्री के प्रति प्रेम भी तो बंधुत्व की भावना को ही प्रकट करता है। इसलिए मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि यह शब्द पूर्णता का द्योतक है।

(पद्य खंड)

पाठ 1

आत्मपरिचय

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है (हरिवंश राय बच्चन)

प्रश्न 1.कविता एक ओर जगजीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ - विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?
उत्तर. कवि ने जीवन का आशय जगत से लिया है अर्थात् वह जगतरूपी जीवन का भार लिए घूमता है। कहने का भाव है कि कवि ने अपने जीवन को जगत का भार माना है। इस भार को वह स्वयं वहन करता है। वह अपने जीवन के प्रति लापरवाह नहीं है। लेकिन वह संसार का ध्यान नहीं करता। उसे इस बात से कोई मतलब नहीं है कि संसार या उसमें रहने वाले लोग क्या करते हैं। इसलिए उसने अपनी कविता में कहा है कि मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ। अर्थात् मुझे इस संसार से कोई या किसी प्रकार का मतलब नहीं है।

प्रश्न 2.जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं' - कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?
उत्तर. दाना का आशय है जानकार लोग अर्थात् सबकुछ जानने वाले और समझने वाले लोग और नादान का अर्थ है न समझने वाले लोग । कवि कहता है कि बहुत बड़े ज्ञानी लोगों ने संसार की सच्चाई को जानने के बहुत प्रयत्न किए, किंतु वे उस सच्चाई को नहीं जान पाए । इस प्रकार कोई अपने आपको

कितना भी ज्ञानी क्यों न समझे वह वास्तविकता में अज्ञानी ही है । इस प्रकार कवि विषादजन्य निराशा के कारण ज्ञानार्जन के प्रयास को व्यर्थ मान रहा है ।

प्रश्न 3. 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता'-पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।
उत्तर. इस कविता में कवि ने 'और' शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया है। इस शब्द की अपनी ही विशेषता है जिसे विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया गया है। 'मैं और' में 'और' शब्द का अर्थ है कि मेरा अस्तित्व बिल्कुल अलग है। में तो कोई अन्य ही अर्थात् विशेष व्यक्ति हूँ। 'और जग' में और शब्द से आशय है कि यह जगत भी कुछ अलग ही है। यह जगत भी मेरे अस्तित्व की तरह कुछ और है। तीसरे 'और' का अर्थ है के साथ। कवि कहता है कि जब मैं और मेरा अस्तित्व बिलकुल अलग है। यह जगत भी बिलकुल अलग है तो मेरा इस जगत के साथ संबंध कैसे बन सकता है। अर्थात् मैं और यह संसार परस्पर नहीं मिल सकते क्योंकि दोनों का अलग ही महत्त्व है।

प्रश्न 4. शीतल वाणी में आग के होने का क्या अभिप्राय है?
उत्तर. शीतल वाणी में आग कहकर कवि ने विरोधाभास की स्थिति पैदा की है। कवि कहता है कि यद्यपि मेरे द्वारा कही हुई बातें शीतल और सरल हैं। जो कुछ मैं कहता हूँ वह ठंडे दिमाग से कहता हूँ, लेकिन मेरे इस कहने में बहुत गहरे अर्थ छिपे हुए हैं। मेरे द्वारा कहे गए हर शब्द में संघर्ष हैं। मैंने जीवन भर जो संघर्ष किए उन्हें जब मैं कविता का रूप देता हूँ तो वह शीतल वाणी बन जाती है। मेरा जीवन मेरे दुखों के कारण मन ही मन रोता है लेकिन कविता के द्वारा जो कुछ कहता हूँ उसमें सहजता रूपी शीतलता होती है।

प्रश्न 5. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?
उत्तर. बच्चे से यहाँ आशय चिड़ियों के बच्चों से है। जब उनके माँ-बाप भोजन की खोज में उन्हें छोड़कर दूर चले जाते हैं तो वे दिनभर माँ-बाप के लौटने की प्रतीक्षा करते हैं। शाम ढलते ही वे सोचते हैं कि हमारे माता-पिता हमारे लिए दाना, तिनका, लेकर आते ही होंगे। वे हमारे लिए भोजन लाएँगे। हमें ढेर सारा चुग्गा देंगे ताकि हमारा पेट भर सके। बच्चे आशावादी हैं। वे सुबह से लेकर शाम तक यही आशा करते हैं कि कब हमारे माता-पिता आएँ और वे कब हमें चुग्गा दें। वे विशेष आशा करते हैं कि हमें ढेर सारा खाने को मिलेगा साथ ही हमें बहुत प्यार-दुलार भी मिलेगा।

प्रश्न 6. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'-की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?
उत्तर. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' - वाक्य की कई बार आवृत्ति कवि ने की है। इससे आशय है कि जीवन बहुत छोटा है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने के बाद अस्त हो जाता है ठीक वैसे ही मानव जीवन है। यह जीवन प्रतिक्षण कम होता जाता है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन एक न एक दिन समाप्त हो जाएगा। हर वस्तु नश्वर है। कविता की विशेषता इसी बात में है। कि इस वाक्य के माध्यम से कवि ने जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। चाहे राहगीर को अपनी मंजिल पर पहुँचना हो या चिड़ियों को अपने बच्चों के पास। सभी जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहते हैं। उन्हें डर है कि यदि दिन ढल गया तो अपनी मंजिल तक पहुँचना असंभव हो जाएगी।

पाठ 2

पतंग (आलोक धन्वा)

प्रश्न 1. सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर. प्रकृति में परिवर्तन निरंतर होता रहता है। जब तेज़ बौछारें अर्थात् बरसात का मौसम चला गया, भादों के महीने की गरमी भी चली गई। इसके बाद आश्विन का महीना शुरू हो जाता है। इस महीने में प्रकृति में अनेक परिर्वन आते हैं –

- सुबह के सूरज की लालिमा बढ़ जाती है। सुबह के सूरज की लाली खरगोश की आँखों जैसी दिखती है।
- शरद ऋतु का आगमन हो जाता है। गरमी समाप्त हो जाती है।
- प्रकृति खिली-खिली दिखाई देती है।
- आसमान नीला व साफ़ दिखाई देता है।
- फूलों पर तितलियाँ मँडराती दिखाई देती हैं।
- सभी लोग खुले मौसम में आनंदित हो रहे हैं।

प्रश्न 2. सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है?

उत्तर. कवि ने पतंग के लिए अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है। पतंग का निर्माण रंगीन कागज़ से होता है। इंद्रधनुष के समान यह अनेक रंगों की होती है। इसका कागज़ इतना पतला होता है कि बूंद लगते ही फट जाता है। यह बाँस की पतली कमानी से बनती है। कवि इनके माध्यम से बाल सुलभ चेष्टाओं का अंकन करता है। पतंग भी बालमन की तरह कल्पनाशील, कोमल व हलकी होती है।

प्रश्न 3. बिंब स्पष्ट करें –

सबसे तेज़ बौछारें गयीं भादो गया

सवेरा हुआ।

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए।

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़

चलाते हुए घंटी बजाते हुए ज़ोर-जोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए और

आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए

कि पतंग ऊपर उठ सके।

उत्तर. कवि ने इस कविता में दृश्य बिंब का सार्थक व स्वाभाविक प्रयोग किया है। उन्होंने बच्चों के भावानुरूप बिंब का प्रयोग किया है। पाठक भी कवि की संवेदनाओं को शीघ्र ग्रहण कर लेता है। इस अंश के निम्नलिखित बिंब हैं –

तेज बौछारें – गतिशील दृश्य बिंब

सवेरा हुआ – स्थिर दृश्य बिंब

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा – स्थिर दृश्य बिंब

पुलों को पार करते हुए – गतिशील दृश्य बिंब

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए – गतिशील दृश्य बिंब

घंटी बजाते हुए जोर – जोर से – श्रव्य बिंब

चमकीले इशारों से बुलाते हुए – गतिशील दृश्य बिंब

आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए – स्पर्श दृश्य बिंब

पतंग ऊपर हठ सके – गतिशील दृश्य बिंब

प्रश्न 4. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास – कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है?

उत्तर. कपास से बच्चों को गहरा संबंध है। दोनों में काफ़ी समानताएँ हैं। कपास जैसे सफ़ेद होती है, वैसे ही बच्चे भी सफ़ेद अर्थात् गोरे होते हैं। कपास की तरह ही बच्चे भी कोमल और मुलायम होते हैं। कपास के रेशे की तरह ही उनकी भावनाएँ। होती हैं। वास्तव में बच्चों की कोमल भावनाओं का और उनकी मासूमियत का प्रतीक है।

प्रश्न 5. पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं – बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है?

उत्तर. जिस तरह पतंग ऊपर और ऊपर उड़ती जाती है, ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती हैं। पतंगों के साथ साथ उनकी भावनाएँ भी उड़ती जाती हैं अर्थात् उनके मन में नई-नई इच्छाएँ और उमंगें आती हैं। वे भी आसमान की अनंत ऊँचाई तक पहुँच जाना चाहते हैं ताकि अपनी हर इच्छा पूरी कर सकें।

प्रश्न 6. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(अ) छतों को भी नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए ।

(ब) अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से

और बच जाते हैं तब तो

और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं।

1. दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है?

2. जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती है ?

3. खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर. 1. दिशाओं को मृदंग की तरह बेजाने का तात्पर्य है कि जब बच्चे ऊँची पतंगें उड़ाते हैं तो वे दिशाओं तक जाती लगती है। तब ऐसा प्रतीत होता है मानो बच्चों की किलकारियों से दिशाएँ मृदंग बजा रही हैं।

2. जब पतंग सामने हो तो छत कठोर नहीं लगती क्योंकि पैरों में अनजानी थिरकन भर जाती है। छत पर दौड़ते हुए। ऐसा लगता है मानो हम किसी मुलायम घास पर दौड़ रहे हों।

3. यदि जीवन में खतरनाक परिस्थितियों का सामना कर लिया हो तो दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में कोई कठिनाई नहीं होती। मुझे बहुत सहजता महसूस होती है। खतरनाक परिस्थितियों के आगे दुनिया की चुनौतियाँ स्वयं ही छोटी पड़ जाती है।

पाठ 3

कविता के बहाने

बात सीधी थी पर (कुँवर नारायण)

प्रश्न 1. इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने क्या है?

उत्तर. इसका अर्थ है-भेदभाव, अंतर व अलगाववाद को समाप्त करके सभी को एक जैसा समझना। जिस प्रकार बच्चे खेलते समय धर्म, जाति, संप्रदाय, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब आदि का भेद नहीं करते, उसी प्रकार कविता को भी किसी एक वाद या सिद्धांत या वर्ग विशेष की अभिव्यक्ति नहीं करनी चाहिए। कविता शब्दों का खेल है। कविता का कार्य समाज में एकता लाना है।

प्रश्न 2. 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?

अथवा

'कविता के बहाने उसकी उड़ान और उसके खिलने का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. कवि ने बताया कि चिड़िया अपने पंखों से एक जगह से दूसरी जगह उड़ती है। इसी प्रकार कविता भी कल्पना से हर जगह पहुँचती है। उसमें कल्पना की उड़ान होती है। कवि फूल खिलने की बात करता है। जिस प्रकार फूल खिलकर अपने रंग और महक से संसार को आनंदित करते हैं, उसी प्रकार कविता भी अपने शब्दों और भावों से सारे संसार को आनंदित करती है । दूसरे शब्दों में, कविता का आधार प्राकृतिक वस्तुएँ हैं। वह लोगों को अपनी रचनाओं से मुग्ध करती है।

प्रश्न 3. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं

उत्तर. कविता और बच्चों के क्रीड़ा-क्षेत्र का स्थान व्यापक होता है। बच्चे खेलते-कूदते समय काल, जाति, धर्म, संप्रदाय आदि का ध्यान नहीं रखते। वे हर जगह, हर समय व हर तरीके से खेल सकते हैं। उन पर कोई सीमा का बंधन नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है। शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य आदि उपकरण मात्र हैं। इनमें नि:स्वार्थता होती है। बच्चों के सपने असीम होते हैं, इसी तरह कवि की कल्पना की भी कोई सीमा नहीं होती।

प्रश्न 4. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने क्या होते हैं।

उत्तर. कवि कहता है कि फूल एक निश्चित समय पर खिलते हैं। उनका जीवन भी निश्चित होता है, परंतु कविता के खिलने का कोई निश्चित समय नहीं होता है। उसकी जीवन अवधि असीमित है। वे कभी नहीं मुरझाती। उनकी कविताओं की महक सदैव फैलती रहती है। कविता से मिलने वाला आनंद शाश्वत और स्थायी होता है ।

प्रश्न 5. 'भाषा को सहूलियत' से बरतने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर. इसका अर्थ यह है कि कोई भी रचना करते समय कवि को आडंबरपूर्ण, भारी-भरकम, समझ में न आने वाली शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अपनी बात को सहज व व्यावहारिक भाषा में कहना चाहिए ताकि आम लोग कवि की भावना को समझ सकें।

प्रश्न 6. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है; कैसे?

उत्तर. 'बात' का अर्थ है-भाव, भाषा उसे प्रकट करने का माध्यम है। दोनों का चोली-दामन का साथ है, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण यह है कि मनुष्य शब्दों के चमत्कार में उलझ जाता है। वह इसे गलतफहमी का शिकार हो जाता है कि कठिन तथा नए शब्दों के प्रयोग से वह अधिक अच्छे ढंग से अपनी बात कह सकता है। भाव को कभी भाषा का साधन नहीं बनाना चाहिए।

प्रश्न 7. बात (कथ्य) के लिए नीचे दी गई विशेषताओं का उचित बिंबों/मुहावरों से मिलान करें ।

बिंब/मुहावरा	विशेषता
(क) बात की चूड़ी मर जाना	कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना
(ख) बात की पेंच खोलना	बात का पकड़ में न आना।
(ग) बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना	बात का प्रभावहीन हो जाना
(घ) पेंच को कील की तरह ठोंक देना	बात में कसावट का न होना।
(ङ) बात का बन जाना	बात को सहज और स्पष्ट करना

बिंब/मुहावरा	विशेषता
(क) बात की चूड़ी मर जाना	कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना
(ख) बात की पेंच खोलना	बात का पकड़ में न आना
(ग) बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना	बात का प्रभावहीन हो जाना
(घ) पेंच को कील की तरह ठोंक देना	बात में कसावट का न होना
(ङ) बात का बन जाना	बात को सहज और स्पष्ट करना

उत्तर:

पाठ 4

कैमरे में बंद अपाहिज (रघुवीर सहाय)

प्रश्न 1. कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं-आपकी समझ से इनका क्या औचित्य है?

उत्तर. कवि ने कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी हैं। ये कोष्ठक कवि के मुख्य भाव को व्यक्त करते हैं। इनमें लिखी पंक्तियों के माध्यम से अलग-अलग लोगों को संबोधित किया गया है। ये एक तरह से संचालन करने के लिए हैं; जैसे-

कैमरा मैन के लिए-

कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा

कैमरा ..... की कीमत है।

दर्शकों के लिए

हम खुद इशारे से बताएँगे क्या ऐसा?

यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा

अपंग व्यक्ति को

वह अवसर खो देंगे ?

बस थोड़ी कसर रह गई।

ये कोष्ठक कविता के मुख्य उद्देश्य को अभिव्यक्त करने में सहायक होते हैं।

प्रश्न 2. 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है-विचार कीजिए।

अथवा

'कैमरे में बंद अपाहिज' में निहित क्रूरता को उजागर कीजिए।

उत्तर. कविता में बताया गया कि साक्षात्कारकर्ता अपाहिज व्यक्ति के साक्षात्कार का उद्देश्य सामाजिक बताता है । वह कहता है कि इस साक्षात्कार का उद्देश्य सामाजिक है ताकि लोग अपाहिज व्यक्ति के दुःख को समझें और उसकी सहायता करें । किंतु साक्षात्कार का वास्तविक उद्देश्य तो व्यावसायिक होता

है । साक्षात्कार को लोकप्रिय बनाने के लिए अपाहिज व्यक्ति से ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं, जिन्हें सुनकर उसका दुःख और बढ़ जाता है और वह रोने लगता है । इस प्रकार इस कविता में उन लोगों की बनावटी करुणा का वर्णन मिलता है जो दुख दरिद्रता को बेचकर यश प्राप्त करना चाहते हैं। एक अपाहिज व्यक्ति के साथ झूठी सहानुभूति जताकर उसकी करुणा का सौदा करना चाहते हैं। एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टी.वी. पर दर्शाना वास्तव में क्रूरता की चरमसीमा है।

प्रश्न 3. हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर. 'हम समर्थ शक्तिमान' पंक्ति के माध्यम से मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता का पता चलता है। मीडिया कमी या मीडिया-संचालक अपने प्रचार-प्रसार की ताकत के कारण किसी का भी मजाक बना सकते हैं तथा किसी को भी नीचे गिरा सकते हैं। चैनल के मुनाफ़े के लिए संचालक किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं। कार्यक्रम का निर्माण व प्रस्तुति संचालकों की मर्जी से होता है। 'हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति में लाचारी का भाव है। मीडिया के सामने आने वाला व्यक्ति कमजोर होता है। मीडिया के अटपटे प्रश्नों से संतुलित व्यक्ति भी विचलित हो जाता है। अपंग या कमजोर व्यक्ति तो रोने लगता है। यह सब कुछ उसे कार्यक्रम-संचालक की इच्छानुसार करना होता है।

प्रश्न 4. यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे? तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

उत्तर. यदि साक्षात्कार देने वाला अपंग व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रो देंगे तो प्रश्नकर्ता सहानुभूति प्राप्त करने में सफल हो जाएगा। उसका यह भी उद्देश्य पूरा हो जाएगा कि हमने सामाजिक कार्यक्रम दिखाया है। एक ऐसा कार्यक्रम जिसमें अपंग व्यक्ति की व्यथा का मार्मिक चित्रण हुआ है। उस व्यक्ति की सोच और वेदना का हू-ब-हू चित्र हमने दिखाया है।

प्रश्न 5. 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है?

उत्तर. इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति व्यावसायिक नजरिया प्रस्तुत किया है। परदे पर जो कार्यक्रम दिखाया जाता है, उसकी कीमत समय के अनुसार होती है। दूरदर्शन व कार्यक्रम-संचालक को जनता के हित या पीड़ा से कोई मतलब नहीं होता। वे अपने कार्यक्रम को कम-से-कम समय में लोकप्रिय करना चाहते हैं। अपंग की पीड़ा को कम करने की बजाय अधिक करके दिखाया जाता है ताकि करुणा को 'नकदी' में बदला जा सके। संचालकों की सहानुभूति भी बनावटी होती है।

पाठ 5

उषा (शमशेर बहादुर सिंह)

प्रश्न 1. कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है?

अथवा

'शमशेर की कविता गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है।'-पुष्टि कीजिए।

उत्तर. कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब-योजना की है। भोर के समय आकाश नीले शंख की तरह पवित्र लगता है। उसे राख से लिपे चौके के समान बताया गया है जो सुबह की नमी के कारण गीला लगता है। फिर वह लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। कवि दूसरी उपमा स्लेट पर लाल खड़िया मलने से देता है। ये सारे उपमान ग्रामीण परिवेश से संबंधित हैं। आकाश के नीलेपन में जब सूर्य प्रकट होता है तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा शरीर झिलमिला रहा है। सूर्य के उदय होते ही उषा का जादू समाप्त हो जाता है। ये सभी दृश्य ग्रामीण परवेश से एक- से जुड़े हुए हैं और गाँव में होने वाली गतिविधियों को दर्शाते हैं । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है ।

प्रश्न 2. भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

नई कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है? समझाइए।

उत्तर. नई कविता के लगभग सभी कवियों ने सदा कुछ विशेष कहना चाहा है अथवा कविता की विषयवस्तु को नए ढंग से प्रस्तुत करना चाहा है। उन्होंने इसके लिए कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच स्थान छोड़ दिया है। जो कुछ उन्होंने इसके माध्यम से कहा है, कविता उससे नए अर्थ देती है। उपरोक्त पंक्तियों में यद्यपि सुबह के आकाश को चौका जैसा माना है और यदि इसके कोष्ठक में दी गई पंक्ति को देखा जाए तो तब चौका जो अभी-अभी राख से लीपा है, उसका रंग मटमैला है। इसी तरह सुबह का आकाश भी दिखाई देता है।

पाठ 6

बादलराग (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला)

.प्रश्न 1. अस्थिर सुख पर दुख की छाया पंक्ति में दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर. 'दुख की छाया' मानव जीवन में आने वाले दुखों, कष्टों और प्रतिकूल परिस्थितियों को कहा गया है। मनुष्य के जीवन 'सुख और दुःख' धूप-छाँव की तरह में आते-जाते रहते हैं और दोनों ही अस्थिर हैं।

प्रश्न 2. अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?

उत्तर. इस पंक्ति में शोषक और धनी वर्ग के लोगों की ओर संकेत किया गया है। जिस प्रकार क्रांतिकारी बादल अपने वज्रपात से ऊँचे-ऊँचे पहाड़ की चोटियों को घायल कर देते हैं, उसी प्रकार समाज के शोषित वर्ग की चेतना पूंजीवादी और प्रभुसत्ता से संपन्न लोगों को अपने प्रहार से ध्वस्त कर सकती है।

प्रश्न 3. विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते पंक्ति में विप्लव-रव से क्या तात्पर्य है? छोटे ही हैं शोभा पाते ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर. 'विप्लव-रव' से तात्पर्य क्रांति के स्वर से है। समाज में क्रांति आने से पूंजीपतियों का शासन ध्वस्त हो जाता है। उनकी प्रभुसत्ता समाप्त हो जाती है। 'छोटे ही हैं शोभा पाते' इसलिए कहा गया है क्योंकि क्रांति से आम आदमी ही शोभा पाते हैं। समाज का निम्न वर्ग किसी भी क्रांति से प्रभावित नहीं होता, बल्कि उनको इन परिस्थितियों से आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है।

प्रश्न 4. बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?

उत्तर. बादलों के आगमन से प्रकृति में कई परिवर्तन होते हैं। इनके आगमन से अकाल की चिंता से व्याकुल किसान के मन में नया जोश और उल्लास उत्पन्न हो जाता है। पृथ्वी से पौधों का अंकुरण होने लगता है। बिजली चमकती है तथा उसके गिरने से पर्वत-शिखर टूटते हैं। सर्वत्र हरियाली होने का आभास होने लग जाता है।

प्रश्न 5. व्याख्या कीजिए -

1. तिरती है समीर-सागर पर

अस्थिर सुख पर दुःख की छाया

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया।

उत्तर. कवि बादल का आह्वान करते हुए कहता है कि हे क्रांतिदूत रूपी बादल! तुम आकाश में ऐसे मंडराते रहते हो जैसे पवन रूपी सागर पर कोई नाव तैर रही हो। यह उसी तरह है जैसे क्षणिक सुख पर दुःख की छाया मंडरा रहे हैं। सुख हवा के समान चंचल है तथा अस्थायी है। बादल संसार के व्यथित यानी जले हुए हृदय पर निर्दयी प्रलयरूपी माया के रूप में हमेशा स्थित रहते हैं। बादलों की युद्धरूपी नौका में आम आदमी की इच्छाएँ भरी हुई रहती हैं।

2. अट्टालिका नहीं है रे

आतंक-भवन

सदा पंक पर ही होता

जल-विप्लव-प्लावन,

उत्तर. कवि इन पंक्तियों में पूंजीपतियों के बड़े-बड़े घर अर्थात् अट्टालिकाओं के विषय में कहता है कि वास्वत में ये तो आतंक भवन हैं। गरीबों का शोषण करके खड़े किए गए इन घरों में रहने वाले लोग संवेदनहीन होते हैं। वर्षा से जो बाढ़ आती है, वह सदा कीचड़ से भरी धरती को ही डुबोती है। भयंकर

जल-प्लावन सदैव कीचड़ पर ही होता है। यही जल जब कमल की पंखुड़ियों पर पड़ता है तो वह अधिक प्रसन्न हो उठता है। यानि क्रांति का जन्म तो समाज के निम्न वर्ग से ही होता है और वही परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है।

पाठ 7

कवितावली

लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप (तुलसीदास)

प्रश्न 1. कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर. तुलसी के समकालीन समाज में आर्थिक विषमता और गरीबी का चरम पर थी। कवि ने ग़रीबी और आर्थिक विषमता को खुद भी बखूबी झेला था जिस कारण उन्होंने इसके सजीव चित्र उकेरे हैं। किसानों के पास खेत नहीं थे, व्यापारी व्यापर नहीं कर पाते थे और भिखारी को भीख तक नहीं मिलती थी। यहाँ तक कि समाज में लोग अपने पेट की आग मिटाने के लिए अपने बेटा-बेटी को भी बेच देते थे। सभी ओर भूखमरी और विवशता थी। इस वर्णन से यह सिद्ध होता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

प्रश्न 2. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है- तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर. मनुष्य का जन्म, कर्म, कर्म-फल सब ईश्वर के अधीन हैं। निष्ठा और पुरुषार्थ से ही मनुष्य के पेट की आग का शमन हो सकता है। पेट की आग बुझाने के लिए मेहनत के साथ-साथ ईश्वर कृपा का होना जरूरी है। फल प्राप्ति के लिए दोनों में संतुलन होना आवश्यक है। ईश्वर का मेघ मनुष्यों को बुरे काम करने से रोकता है और मोक्ष की ओर ले जाता है।

प्रश्न 3. तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी?

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ / काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ। इस सवैया में काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर. इन पंक्तियों में तुलसीदास ने भारतीय समाज के जाति नियमों को दिखाया है। भारतीय समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। तुलसी कहते हैं कि यदि अपनी बेटी की शादी की बात करते तो सामाजिक संदर्भ में अंतर आ जाता, क्योंकि विवाह के बाद बेटी को अपनी जाति छोड़कर अपनी पति की जाति अपनानी पड़ती है। यदि तुलसीदास किसी दूसरी जाति में अपनी बेटी का विवाह करवा देते तो तुलसी के परिवार की जाति खराब हो जाती। अगर वे बिना जाँच के अपनी लड़की की शादी करते तो समाज में जाति प्रथा पर कठोर आघात होता । इससे सामाजिक संघर्ष बढ़ सकता था।

प्रश्न 4. धूत कहौ ….. वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर. तुलसीदास का सारा जीवन अभाव में बीता । जन्म देते ही माँ-बाप ने उनको त्याग दिया परन्तु उन्होंने अपने स्वाभिमान को बनाये रखा जिसकी छवि हमें उनके काव्यों में देखने को मिलती है। उन्होंने इस छंद में भक्ति की गहनता और सघनता में उपजे भक्त हृदय के आत्मविश्वास का चित्रण किया है जिसमें उन्होंने समाज में प्रचलित जाति-पाति और धर्म का खुलकर विरोध किया।

प्रश्न 5. व्याख्या करें

(क) मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।

जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥

(ख) जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥

(ग) माँग के खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु ने दैबको दोऊ॥

(घ) ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट को ही पचत, बेचत बेटा-बेटकी॥

उत्तर. (क) जब लक्ष्मण को बाण लगने पर वह मूर्छित हो जाते हैं तब श्रीराम विलाप करते हुए कहते हैं कि तुमने मेरे हित के लिए माता-पिता का त्याग कर दिया और वन में रहकर सर्दी, गर्मी, आँधी को सहा। यदि मुझे यह पता होता कि वन में रहकर इस प्रकार भाई का वियोग सहत करना पड़ेगा तो पिता द्वारा लक्ष्मण को वन में साथ ले जाने की बात कभी नहीं मानता । राम, लक्ष्मण की निःस्वार्थ सेवा को याद कर रहे हैं।

(ख) राम लक्ष्मण को मूर्छित देख कहते हैं कि लक्ष्मण के बिना उनकी स्थिति उसी प्रकार है जैसे पंख के बिना पक्षी अत्यंत दीन हो जाते हैं, मणि के बिना सांप और सूंढ़ के बिना हाथी। वह स्वयं को बहुत दीन व दयनीय दशा में पाते हैं। अगर उनको अपने भाई लक्ष्मण के बिना जीना पड़ा तो उनका जीवन शक्तिहीन हो जाएगा।

(ग) तुलसीदास पर समाज की बातों का कोई असर नहीं पड़ता और न ही वे इसकी परवाह करते हैं। वे केवल राम के सेवक हैं और किसी पर आश्रित नहीं हैं। जीवन-निर्वाह के लिए भिक्षावृत्ति करते हैं और मस्जिद में सोते हैं। उन्हें संसार के सुख, वैभव की कोई इच्छा नहीं है।

(घ) इस पंक्ति में तुलसीदास अपने समय की आर्थिक विषमता का वर्णन करते हुए कहा है कि पेट की भूख की ज्वाला को शांत करने के लिए लोग कोई भी अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म का कार्य करने से नहीं हिचकते। धर्म-अधर्म में कोई भेद नहीं करता। यहाँ तक कि विवश होकर अपनी संतान को बेचने पर भी मजबूर हो जाते हैं।

प्रश्न 6. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर. हाँ, भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। वे लक्ष्मण को मूर्छित पाकर अत्यंत व्याकुल हो जाते हैं। लक्ष्मण के बिना राम फूट-फूट कर रो रहे हैं। राम कहते हैं कि संसार में धन, संपत्ति, भवन, परिवार तो बार-बार मिल जाते हैं लेकिन लक्ष्मण जैसा भाई बार-बार नहीं मिल सकता। उन्होंने कहा कि सब यही कहेंगे कि राम ने अपनी पत्नी के लिए अपने भाई को न्योछावर कर दिया और उनको इस कलंक के साथ जीना पड़ेगा।

प्रश्न 7. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर. हनुमान लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी लाने हिमालय पर्वत गए थे। उन्हें आने में देर हो रही थी। लक्ष्मण-मूर्छा के बाद पूरा माहौल शोकग्रस्त हो गया था। समस्त भालू-वानर सेना राम को देख अत्यंत दुखी थे। जैसे ही हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर शोक-सभा में पहुँचे तो वे पूरा का पूरा पर्वत ही अपने हाथ पर उठा लाए थे। हनुमान को देख राम तथा समस्त जन थोड़े खुश हुए तथा शीघ्र ही वैद्य जी ने लक्ष्मण को संजीवनी बूटी पिलाई तो लक्ष्मण उठ खड़े हुए। राम सहित पूरी वानर-सेना खुश हो गई और उसमे उत्साह का संचार हो गया । शोक करुण रस का स्थायी भाव है और उत्साह वीर रस का स्थयी भाव है । इस प्रकार से शोक-ग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को वीर रस का आविर्भाव कहा गया है।

प्रश्न 8. "जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई । नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई॥

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर. मेरे विचार से राम लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने से बड़े दुखी हैं । वे लक्ष्मण की इस दशा का दोषी स्वयं को मान रहे हैं । अतः अत्यंत शोक के कारण राम ने सीता के बारे में ऐसा कहा है । राम सीता से अत्यधिक प्रेम करते थे । अतः मेरे विचार से इसमें राम के दृष्टिकोण को परिस्थितियों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए ।

पाठ 8

रुबाई (फिराक गोरखपुरी)

प्रश्न 1. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि रक्षाबंधन सावन के महीने में आता है। इस समय आकाश में घटाएँ छाई होती हैं तथा उनमें बिजली भी चमकती है। राखी के लच्छे बिजली कौधने की तरह चमकते हैं। बिजली की चमक सत्य को उद्घाटित करती है तथा राखी के लच्छे रिश्तों की पवित्रता को व्यक्त करते हैं। घटा का जो संबंध बिजली से है, वही संबंध भाई का बहन से है।

प्रश्न 2. टिप्पणी करें।

(क) गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता।

(ख) सावन की घटाएँ व रक्षाबंधन का पर्व।

उत्तर. (क) गोदी के चाँद से आशय है – बच्चा और गगन के चाँद से आशय है – आसमान में निकलने वाला चाँद। इन दोनों में गहरा और नजदीकी रिश्ता है। दोनों में कई समनाताएँ हैं। आश्चर्य यह है कि गोदी का चाँद गगन के चाँद को पकड़ने के लिए उतावला रहता है तभी तो सूरदास को कहना पड़ा "मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।"

(ख) रक्षाबंधन का पवित्र त्योहार सावन के महीने में आता है। सावन की घटाएँ जब घिर आती हैं तो चारों ओर खुशी की बयार बहने लगती है। राखी का यह त्यौहार इस मौसम के द्वारा और अधिक सार्थक हो जाता है। सावन की काली-काली घटाएँ भाई को संदेश देती हैं कि तेरी बहन तुझे याद कर रही है। यदि तू इस पवित्र त्यौहार पर नहीं गया तो उसकी आँखों से मेरी ही तरह बूंदें टपक पड़ेगी।

पाठ 9

छोटा मेरा खेत

बगुलों के पंख (उमाशंकर जोशी)

प्रश्न 1. छोटे चौकोने खेत की कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्ध निहित है?

उत्तर. जिस तरीके से खेत पर किसान खेती करता है, ठीक उसी तरह पन्ने पर कवि कविता लिखता है। इसलिए कवि पन्ने को खेत कह रहा है। कवि ने कवि कर्म अर्थात कविता निर्माण को खेत में बीज रोपने की तरह माना है। इसके माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि कविता की रचना करना कोई सरल कार्य नहीं है। क्योंकि जिस प्रकार खेत में बीज बोने से लेकर फ़सल काटने तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, ठीक उसी प्रकार कविता की रचना करने के लिए अनेक प्रकार के कठिन कार्य करने पड़ते हैं और अनेक भावनात्मक विचारों को झेलना पड़ता है।

प्रश्न 2. रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' क्या है?

उत्तर. रचना के संदर्भ में 'अंधड़' का अर्थ है – भावनात्मक आवेग और 'बीज' का अर्थ है – विचार व अभिव्यक्ति। जब कवि के विचार कल्पना का सहारा लेते हैं तब शब्दों के अंकुर फूटने से कवि के विचार रचना का रूप ले लेते है।

प्रश्न 3. 'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

उत्तर. अक्षय का अर्थ होता है – कभी नष्ट न होने वाला। कविता का रस इसी तरह का होता है। कवि की रचना से मिलने वाले रस अर्थात आनंद को कोई जितना भी लूट ले वह कभी भी समाप्त होने वाला नहीं है, वह तो लगातार बढ़ता जाता है। खेत का अनाज तो खत्म हो सकता है, लेकिन काव्य का रस कभी खत्म नहीं होता। कविता रूपी रस अनंतकाल तक बहता है। कविता रूपी अक्षय पात्र हमेशा भरा रहता है।

प्रश्न 4. व्याख्या करें –

शब्द के अंकुर फूटे

पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

रोपाई क्षण की,

कटाई अनंतता की

लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।

उत्तर. कवि कहना चाहता है कि जिस प्रकार खेती में बीज विकसित होकर पौधे का रूप धारण कर लेता है और पत्तों व फूलों से लदकर झुक जाता है। ठीक उसी प्रकर जब कवि के विचार कल्पना का सहारा लेते हैं तब शब्दों के अंकुर फूटने से कवि के विचार रचना का रूप ले लेते है। कवि कहता है कि कवि ने अपनी रचना को पल भर में रचा था, परंतु उससे मिलने वाला फल अर्थात आनंद लंबे समय तक मिलता रहता है। कवि की रचना से मिलने वाले रस अर्थात आनंद को कोई जितना भी लूट ले वह कभी भी समाप्त होने वाला नहीं है, वह तो लगातार बढ़ता जाता है। कवि कहता है कि उनका कविता रूपी खेत छोटा-सा है, परन्तु उसके रस का पात्र हमेशा भरा रहने वाला है अर्थात कभी समाप्त होने वाला नहीं है।

वितान पाठ्यपुस्तक

(प्रस्तुत खंड में से 2*5 इस तरह कुल मिलाकर 10 अंकों के प्रश्न पूछे जाएंगे)

पाठ 1 – सिल्वर वेडिंग

पाठ परिचय – सिल्वर वैडिंग के लेखक मनोहर श्याम जोशी हैं। इस कहानी के जरिये उन्होंने दो पीढ़ियों के बीच के अंतराल (Generation Gap) के अंतर्द्वंद को दर्शाया हैं। यानि यह कहानी दो पीढ़ियों (पुरानी पीढ़ी व नई पीढ़ी) के विचारों व जीने के तौर तरीकों के अंतर को स्पष्ट करती है।कहानी के मुख्य पात्र यशोधर बाबू पुराने ख्यालात के व्यक्ति हैं जो अपने परंपरागत मूल्यों , आदर्शों और अपने संस्कारों को जीवित रखना चाहते है मगर उनके बच्चे नए जमाने के हिसाब से जीवन जीने में विश्वास करते है।

उनकी पत्नी भी समय के साथ साथ अपने आप को बदल कर आधुनिक तौर तरीके अपना चुकी हैं। लेकिन यशोधर बाबू अपने आप को बदलने को राजी नही है और यही बात उनके व परिजनों के बीच टकराव की वजह बन जाती हैं। यशोधर पंत एक सरकारी दफ्तर में सेक्शन ऑफिसर के पद पर तैनात थे और दिल्ली के गोल मार्केट में रहते थे। वो पुरानी मान्यताओं व विचारधारा को मानने वाले सीधे सरल व्यक्ति थे । मगर उनके परिवार के सभी सदस्य आधुनिक जीवन शैली अपना चुके थे। यहाँ तक कि उनकी पत्नी जो कभी पूर्ण रूप से उन्हीं की तरह संस्कारी थी। अब उसने भी बच्चों की मर्जी के अनुसार आधुनिक तौर तरीके अपना लिए थे और मॉडर्न बन चुकी थी । इसी कारण यशोधर बाबू का अपने परिवार वालों के साथ मतभेद चलता रहता था।

यशोधर बाबू अपनी मॉडर्न पत्नी का "शायनल बुढ़िया" , "चटाई का लहंगा" और "बूढ़ी मुँह मुंहासे लोग करे तमाशे" कहकर मजाक बनाते थे। यशोधर बाबू के तीन बेटे और एक बेटी थी। सबसे बड़ा बेटा भूषण 1500/- रुपए प्रति माह के वेतन पर एक विज्ञापन कंपनी में काम करता था। दूसरा बेटा आई.ए.स की तैयारी कर रहा था और तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका जा चुका था। बेटी डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए अमेरिका जाना चाहती थी। इसीलिए वह विवाह के लिए तैयार नहीं थी। कहानी की शुरुआत करते हुए लेखक कहते हैं कि यशोधर बाबू अपने दफ्तर में बैठे हुए अपनी घड़ी को देखते हैं जो उस वक्त ठीक शाम के 5 बजकर 25 मिनट बजा रही थी। अपनी घड़ी को 5 मिनट सुस्त (Late) बताते हुए वो जैसे ही दफ्तर से घर जाने के लिए उठ खड़े हुए तो दफ्तर के एक कर्मचारी चड्ढा ने उनकी घड़ी पर व्यंग्य कसते हुए उनसे डिजिटल घड़ी लेने की बात की।

उसकी बात का जबाब देते हुए यशोधर बाबू उसे बताते हैं कि यह घड़ी उन्हें शादी में उपहार स्वरूप मिली थी । इसीलिए उन्हें यह बेहद प्रिय हैं। बातों – बातों में उनके दफ्तरवालों को यह पता लग जाता हैं कि उनकी शादी 6 फरवरी 1947 को हुई थी और आज उनकी सिल्वर वेडिंग (शादी की 25वीं सालगिरह) है। वो यशोधर बाबू से पार्टी मांगने लगते हैं। यशोधरा बाबू 30 रूपये उन्हें पार्टी के लिए देते तो हैं मगर खुद उस चाय पार्टी में शामिल होने के बजाय अपने घर को निकल पड़ते हैं।

अचानक यशोधरा बाबू को किशन दा (दा यानि बड़ा भाई) की याद आती है जो ऑफिस में चाय- पानी पीने , गप्पें लड़ाने को समय की बर्बादी मानते थे। वो किशन दा की कही हुई सभी बातों का अनुसरण किया करते थे। उनको ही अपना मार्गदर्शक व आदर्श मानते थे। जब यशोधरा बाबू मैट्रिक पास कर दिल्ली आये थे तो किशन दा ने ही उन्हें अपने घर में शरण दी थी। सरकारी नौकरी करने के लिए उस समय उनकी उम्र कम थी। इसीलिए उन्होंने उन्हें कुछ समय के लिए अपने घर में रसोईया बना दिया था। और बाद में उन्हें अपने ही ऑफिस में नौकरी दिलवा दी। यशोधर बाबू के जीवन व चरित्र निर्माण में किशन दा का बहुत बड़ा योगदान रहा। उन्होंने किशन दा से ही ऑफिस में रहने व कार्य करने के तौर तरीके सीखे थे । किशन दा आजीवन अविवाहित रहे। उनका जीवन बहुत ही सरल व सादगी भरा था। वो धार्मिक , व परोपकारी व्यक्ति थे। वो अपने आदर्शों पर चलते थे व समाज सेवा का कार्य करते थे। वो सभी के मार्गदर्शक थे।

वो पहाड़ (कुमाऊं , उत्तराखंड) से नौकरी के लिए आने वाले लोगों के रहने – खाने की अपने घर में ही व्यवस्था करते थे। उनकी नौकरी ढूंढने में भी मदद करते थे। वो अपनी सभ्यता व संस्कृति से

प्रेम करते थे। यशोधर बाबू ने उनसे यह सब सीखा और उनका अपने जीवन में अनुसरण किया। यशोधर बाबू की एक निश्चित दिनचर्या थी। वो पैदल ही घर से ऑफिस जाते और शाम को 5:00 बजे ऑफिस के बाद सबसे पहले बिडला मंदिर जाते थे। फिर पार्क में बैठकर प्रवचन सुनते थे। उसके बाद सब्जी मंडी जाकर सब्जी खरीद कर पैदल ही घर पहुंचते थे। इस तरह 5:00 बजे ऑफिस से निकल कर 8:00 बजे के बाद ही वो अपने घर पहुंचते थे।हालाँकि वो अब ऑफिस पैदल ही जाने लगे थे लेकिन पहले साइकिल से जाते थे। उनके बच्चे अब बड़े हो चुके थे जिन्हें उनका साइकिल से ऑफिस जाना पसंद नहीं था। स्कूटर उन्हें पसंद नहीं था और कार वो खरीद नहीं सकते थे। इसीलिए उन्होंने पैदल ही जाना – आना शुरू कर दिया था।

आज भी वो रोज की तरह दफ्तर से पहले सीधे बिड़ला मंदिर की तरफ जा रहे थे कि रास्ते में अचानक उनकी नजर उस क्वार्टर (कमरे) पर पड़ी जिसमें कभी किशन दा रहा करते थे। उस क्वार्टर को तोड़कर वहाँ तीन मंजिला मकान बना दिया था। उनके बच्चे भी चाहते थे कि वो भी अब अपने पद के अनुसार बड़ा मकान ले लें लेकिन उनको वही जगह पसंद थी। इसीलिए वहां से कहीं और नहीं जाना चाहते थे। यशोधर बाबू व उनके बच्चों के बीच अक्सर विचारों का टकराव चलता रहता था। ऐसे में कभी –कभी वो सोचते थे कि काश किशन दा की तरह वो भी अविवाहित रहते और समाज सेवा में अपना जीवन लगा देते हैं। लेकिन फिर उन्हें उनके रिटायरमेंट के बाद का समय याद आता है। जब किशन दा को किसी ने सहारा नहीं दिया और वो गांव चले गये जहाँ उनकी एक साल के बाद मृत्यु हो गई। इस प्रकार यशोधर बाबू के मन के भीतर विचारों का अंतर्द्वंद चलता रहा था।

यशोधर बाबू का मंदिर जाना , धार्मिक कार्यों में भाग लेना , प्रवचन सुनना आदि उनके परिवार वालों को पसंद नहीं था। उनके बच्चे अक्सर उनसे कहते थे कि अभी वो इतने बूढ़े नहीं हुए कि मंदिर जाकर प्रवचन सुनें। यशोधर बाबू मंदिर जाने के बाद प्रवचन सुनने तो बैठ गये लेकिन आज उनका प्रवचन में बिल्कुल भी मन नहीं लग रहा था। उनके दिमाग में कई तरह के ख्याल आ और जा रहे थे। इसीलिए वो प्रवचन से उठकर सब्जी मंडी की तरफ निकल पड़े । तभी उन्हें याद आया कि उनके बेटे बाजार से सामान लाने के लिए नौकर रखने को कहते हैं मगर खुद जाना पसंद नहीं करते हैं। उनका बड़ा बेटा तो उन्हें अपना वेतन तक नहीं देता है। अपने पैसों व अपनी मर्जी से घर का सामान खुद ही खरीद कर लाता है और फिर सबको उस सामान का रौब दिखाता है। सब्जी मंडी से सब्जी लेकर जब यशोधर बाबू घर पहुंचे तो देखा कि उनका बेटा उनके घर के बाहर अपने बॉस को विदा कर रहा था और घर से अन्य लोग भी विदा ले रहे थे। घर में पार्टी चल रही थी।

पहले तो उन्हें कुछ समझ नहीं आया। बाद में भूषण ने उन्हें शिकायत करते हुए बताया कि उनके घर में उनकी "सिल्वर वेडिंग" की पार्टी चल रही है और वो ही इतनी देर से आ रहे हैं। यह सब सुनकर यशोधर बाबू को बहुत दुख हुआ क्योंकि किसी ने भी उन्हें पार्टी के आयोजन के बारे में कुछ नहीं बताया था । वैसे भी उन्हें पार्टी वगैर बिल्कुल पसंद नहीं थी मगर बच्चों के बहुत आग्रह करने पर उन्होंने केक तो काटा लेकिन केक में अंडा होने व संध्या पूजा करने का बहाना बनाकर खाया नहीं। और वो वहाँ से उठकर संध्या पूजा करने चले गए। और तब तक पूजा स्थल पर ही बैठे रहे जबतक सारे मेहमान घर से विदा नही हुए।मेहमानों के चले जाने के बाद पत्नी के बुलाने पर जब वो बैठक में आये तो उनके बड़े बेटे ने उन्हें ऊनी ड्रेसिंग गाउन गिफ्ट किया और कहा कि वो उसे ही पहन कर कल से सुबह दूध लेने

जाया करें। लेकिन यशोधर बाबू यह सोच रहे थे कि काश !! उनका बेटा उन्हें ड्रेसिंग गाउन देने के बजाय उनसे कहता कि कल से वह उनकी जगह दूध लेकर आया करेगा।

प्रश्न 1. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों? चर्चा कीजिए।

उत्तर. यशोधर बाबू बचपन से ही जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया था। उनका पालन-पोषण उनकी विधवा बुआ ने किया। मैट्रिक होने के बाद वे दिल्ली आ गए तथा किशन दा जैसे कुंआरे के पास रहे। इस तरह वे सदैव उन लोगों के साथ रहे जिन्हें कभी परिवार का सुख नहीं मिला। वे सदैव पुराने लोगों के साथ रहे, पले, बढ़े। अत: उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। उन पर किशन दा के सिद्धांतों का बहुत प्रभाव था। इन सब कारणों से यशोधर बाबू समय के साथ बदलने में असफल रहते हैं। दूसरी तरफ, उनकी पत्नी पुराने संस्कारों की थीं। वे एक संयुक्त परिवार में आई थीं जहाँ उन्हें सुखद अनुभव हुआ। उनकी इच्छाएँ अतृप्त रहीं। वे मातृ सुलभ प्रेम के कारण अपनी संतानों का पक्ष लेती हैं इस प्रकर वे स्वयं को शीघ्र ही बदल लेती है।

प्रश्न 2. पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते/सकती हैं?

उत्तर. 'जो हुआ होगा' वाक्यांश का प्रयोग किशनदा की मृत्यु के संदर्भ में होता है। यशोधर ने किशनदा के जाति भाई से उनकी मृत्यु का कारण पूछा तो उसने जवाब दिया- जो हुआ होगा अर्थात् क्या हुआ, पता नहीं। इस वाक्य की अनेक छवियाँ बनती हैं -

- पहला अर्थ खुद कहानीकार ने बताया कि पता नहीं, क्या हुआ।
- दूसरा अर्थ यह है कि किशनदा अकेले रहे। जीवन के अंतिम क्षणों में भी किसी ने उन्हें नहीं स्वीकारा। इस कारण उनके मन में जीने की इच्छा समाप्त हो गई।
- तीसरा अर्थ समाज की मानसिकता है। किशनदा जैसे व्यक्ति का समाज के लिए कोई महत्त्व नहीं है। वे सामाजिक नियमों के विरोध में रहे। फलतः समाज ने भी उन्हें दरकिनार कर दिया।

प्रश्न 3. 'समहाउ इंप्रापर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं? इस काव्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

उत्तर. यशोधर बाबू 'समहाउ इंप्रॉपर' वाक्यांश का प्रयोग तकिया कलाम की तरह करते हैं। उन्हें जब कुछ अनुचित लगता में उन्हें कई कमियाँ नजर आती हैं। वे नए के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते। यह वाक्यांश उनके व्यक्तित्व को बताने के लिए प्रयोग हुआ है। इस वाक्यांश का प्रयोग कहानी वे निम्नलिखित संदर्भों में करते हैं -

- दफ़्तर में सिल्वर वैडिंग पर
- स्कूटर की सवारी पर
- साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलने पर
- अपनों से परायेपन का व्यवहार मिलने पर
- डी०डी०ए० फ़्लैट का पैसा न भरने पर
- पुत्र द्वारा वेतन पिता को न दिए जाने पर

- खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर
- पत्नी के आधुनिक बनने पर
- शादी के संबंध में बेटी के निर्णय पर
- घर में सिल्वर वैडिंग पार्टी पर
- केक काटने की विदेशी परंपरा पर आदि

कहानी के अंत में यशोधर के व्यक्तित्व की सारी विशेषता सामने उभरकर आती है। वे जमाने के हिसाब से अप्रासंगिक हो गए हैं। यह पीढ़ियों के अंतराल को दर्शाता है।

प्रश्न 4. वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर. इस कहानी में दर्शाए गए परिवार के स्वरूप व संरचना आज भी लगभग हर परिवार में पाई जाती है। संयुक्त परिवार प्रथा समाप्त हो रही है। पुरानी पीढ़ी की बातों या सलाह को नयी पीढ़ी सिरे से नकार रही है। नए युवा कुछ नया करना चाहते हैं, परंतु बुजुर्ग परंपराओं के निर्वाह में विश्वास रखते हैं। यशोधर बाबू की तरह आज का मध्यवर्गीय पिता विवश है। वह किसी विषय पर अपना निर्णय नहीं दे सकता। माताएँ बच्चों के समर्थन में खड़ी नजर आती हैं। आज बच्चे अपने दोस्तों के साथ पार्टी करने में अधिक खुश रहते हैं। वे आधुनिक जीवन शैली को ही सब कुछ मानते हैं। लड़कियाँ फ़ैशन के अनुसार वस्त्र पहनती हैं। यशोधर की लड़की उसी का प्रतिनिधि है। अत: यह कहानी आज लगभग हर परिवार की है।

प्रश्न 5.निम्नलिखित में से किसे आप कहानी की मूल संवेदना कहेंगे/कहेंगी और क्यों?

(क) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

(ख) पीढ़ी अंतराल

(ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव।

उत्तर. मेरी समझ में पीढ़ी अंतराल ही 'सिल्वर वैडिंग' शीर्षक कहानी की मूल संवेदना है। यशोधर बाबू और उसके पुत्रों में एक पीढ़ी को अंतराल है। इसी कारण यशोधर बाबू अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाते हैं। यह सिद्धांत और व्यवहार की लड़ाई है। यशोधर बाबू सिद्धांतवादी हैं तो उनके पुत्र व्यवहारवादी। आज सिद्धांत नहीं व्यावहारिकता चलती है। यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं जो नयी पीढ़ी के साथ कहीं भी तालमेल नहीं रखते। पीढ़ी का अंतराल और उनके विचारों का अंतराल यशोधर बाबू और उनके परिवार के सदस्यों में वैचारिक अलगाव पैदा कर देता है।

प्रश्न 6. यशोधर बाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? दिए गए तीन कथनों में से आप जिसके समर्थन में हैं, अपने अनुभवों और सोच के आधार पर उसके लिए तर्क दीजिए ।

(क) यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं और वे सहानुभूति के पात्र नहीं है।

(ख) यशोधर बाबू में एक तरह का वंद्व है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है।

(ग) यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है।

उत्तर. यशोधर बाबू के बारे में हमारी यही धारणा बनती है कि यशोधर बाबू में एक तरह का द्वंद्व है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता है पर पुराना छोड़ता नहीं, इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है। यद्यपि वे सिद्धांतवादी हैं तथापि व्यावहारिक पक्ष भी उन्हें अच्छी तरह मालूम है। लेकिन सिद्धांत और व्यवहार के इस द्वंद्व में यशोधर बाबू कुछ भी निर्णय लेने में असमर्थ हैं। उन्हें कई बार तो पत्नी और बच्चों का व्यवहार अच्छा लगता है तो कभी अपने सिद्धांत। इस द्वंद्व के साथ जीने के लिए मजबूर हैं। उनका दफ्तरी जीवन जहाँ सिद्धांतवादी है वहीं पारिवारिक जीवन व्यवहारवादी। दोनों में सामंजस्य बिठा पाना उनके लिए लगभग असंभव है। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है।

पाठ 2- जूझ

पाठ परिचय है बताया को संघर्ष के पढाई के बचपन अपने ने यादव आनंद लेखक में पाठ "जूझ" - पा लेखक कारण के जाने न विद्यालय । है दी छुड़ा पढ़ाई की लेखक ने पिता के लेखक ।ँचवी कक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया है हाथ में बाड़ी-खेती छोड़कर लिखाई-पढ़ाई वह कि हैं चाहते पिता के लेखक । करता बात से माँ अपनी इसलिए वह । है तड़पता लिए के जाने विद्यालय मन का लेखक परन्तु । बंटाए स देसाई राव दत्ताजी व्यक्ति प्रतिष्ठित एक के गाँव माँ की लेखक । हैे निवेदन करती हैं कि वे लेखक के पिता को समझाएँ कि वह अपने पुत्र को विद्यालय जाने दें पर समझाने के देसाई राव दत्ताजी । रखते शर्त यह सामने के लेखक वे लेकिन ,हैं जाते हो तैयार लिए के भेजने विद्यालय उसे पिता के लेखक आने से विद्यालय और पहले से जाने विद्यालय हैं के बाद उसे खेत में काम करना होगा और जानवरों को चराना होगा ।

लेखक जब विद्यालय की पाँचवी कक्षा में जाता है तो देखता है कि उसके साथ के सभी विद्यार्थी पास होकर अगली कक्षा में चले गए हैं । है पाता बीच के विद्यार्थियों अपरिचित आपको अपने वह , बालक एक का कक्षाचह्वाण उसके साथ शरारत भी करता है मन का लेखक से घटनाओं सब इन । पर लेखक से कारण इस । है पढ़ता से मेहनत बड़ी लेखक में दिनों वाले आने पर । है जाता हो उदास । है जाता बन मित्र उसका लड़का होशियार नामक पाटिल वसंत और हैं रहते प्रसन्न शिक्षक सभी प अधिक सबसे लेखक में विद्यालय्रभावित होता है अपने मराठी के अध्यापक न से सौंदलगेकर .वा . हैं लिखते कविता भी स्वयं वे तथा है समझ अच्छी बहुत की कविता मराठी को सौंदलगेकर .वा .न । उनके । हैं जानते भी में बारे के कविताओं की भाषा संस्कृत और हिंदी ,अंग्रेजी अलावा के मराठी वे । भी ढंग का पढ़ाने बड़ा प्रभावी है । हैं समझाते और पढ़ाते कविता गाकर से ढंग अच्छे ही बड़े वे ।

उनसे प्रभावित होकर लेखक की कविताओं की ओर रुचि बड़ती जाती है अंदाज के उन्हीं लेखक । पहले । है लगता लिखने कविताएँ छोटी-छोटी करके तुकबंदी और है करता अभ्यास का गाने कविता में खेत को लेखकोें में पानी देते समय अथवा जानवरों को चराते समय अकेलापन बुरा लगता था पर , का गाने को कविताओं में अकेलेपन अब वह क्योंकि है लगा लगाने अच्छा अकेलापन को लेखक अब लकड़ी ,पत्थर पर होने न आदि कागज़ समय चराते भैंस या में खेत बार कई वह । है करता अभ्यास भैंस या तख्ते केकी पीठ पर ही कविता लिखना शुरू कर देता है अपने लिखकर कविताएँ लेखक ।

लेकर संग्रह के कविताओं मराठी उनसे लेखक । है दिखाता को सौंदलगेकर .वा.न श्री शिक्षक मराठी छंद ,भाषा की कविता उनसे वह ही साथ । है जाती हो परिष्कृत भाषा उसकी जिससे ,है लगता पढने भी पर अलंकार और चर्चा प्रारंभ करता है ।

पाठ में आए प्रमुख पात्र एवं उनका परिचय –

1. आनंदा विद्यालय और माँ उसकी पर ,है यादव आनंद नाम वास्तविक का लेखक) स्वयं लेखक – । हैं बुलाते कहकर आनंदा उसे शिक्षक के)
2. लेखक की माँ पक्षध की पढ़ाई की लेखक वह । बताया नहीं नाम का माँ में पाठ –र है । । है करती भी बात से देसाई राव दत्ताजी वह लिए इसके
3. रतन यादव (रतनप्पा)– लेखक के पिता खेती छोड़कर लिखाई-पढ़ाई लेखक कि हैं चाहते वह । । बंटाए हाथ उनका में
4. चहवाण है लेता छीन गमछा उसका पर जाने विद्यालय के लेखक । बालक शरारती का कक्षा – ।
5. मंत्री अध के गणित –्यापक करने दंडित को छात्रों अनुशासनहीन और अनुशासनप्रिय ही बड़ी । । वाले
6. वसंत पाटिल । है करता मित्रता उससे लेखक । मोनिटर एवं बच्चा होशियार सबसे का कक्षा –
7. दत्ताजी राव देसाई को लेखक को पिता के लेखक । व्यक्ति बुजुर्ग एवं प्रतिष्ठित एक के गाँव – भेजने विद्यालयको लेकर समझाते हैं ।
8. न ओर की कविताओं ही होकर प्रभावित इनसे लेखक । अध्यापक मराठी – लगेकरसौंद .वा. । है होता आकर्षित

प्रश्न 1. जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

उत्तर. शीर्षक किसी भी रचना के मुख्य भाव को व्यक्त करता है। इस पाठ का शीर्षक 'जूझ' पूरे अध्याय में व्याप्त है। 'जूझ' का अर्थ है-संघर्ष। इसमें कथा नायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गाँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ व परिवेश को विश्वसनीय ढंग से व्यक्त करता है। इसके अतिरिक्त, आनंद की माँ भी अपने स्तर पर संघर्ष करती है। लेखक के संघर्ष में उसकी माँ, देसाई सरकार, मराठी व गणित के अध्यापक ने सहयोग दिया। अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है। इस कहानी के कथानायक में संघर्ष की प्रवृत्ति है। उसका पिता उसको पाठशाला जाने से मना कर देता है। इसके बावजूद, कथा नायक माँ को पक्ष में करके देसाई सरकार की सहायता लेता है। वह दादा व देसाई सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखता है तथा अपने ऊपर लगे आरोपों का उत्तर देता है। आगे बढ़ने के लिए वह हर कठिन शर्त मानता है। पाठशाला में भी वह नए माहौल में ढलने, कविता रचने आदि के लिए संघर्ष करता है। इस प्रकार यह शीर्षक कथा-नायक की केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

प्रश्न 2. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

उत्तर. लेखक को मराठी का अध्यापक बड़े आनंद के साथ पढ़ाता था। वह भाव छंद और लय के साथ कविताओं का पाठ करता था। बस तभी लेखक के मन में भी यह विचार आया कि क्यों न वह भी

कविताएँ लिखना शुरू करें। खेतों में काम करते-करते और भैंसे चराते-चराते उसे बहुत-सा समय मिल जाता था। इस कारण लेखक ने कविताएँ लिखनी आरंभ कर दी और अपनी सारी कविताओं को वह मराठी के अध्यापक को दिखाता था ताकि उसकी कमियों को दूर किया जा सके।

प्रश्न 3. श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई?

उत्तर. श्री सौंदलगेकर मराठी के अध्यापक थे। लेखक बताता है कि पढ़ाते समय वे स्वयं में रम जाते थे। उनका कविता पढ़ाने का अंदाज बहुत अच्छा था। सुरीला गला, छद की बढ़िया लय-ताल और उसके साथ ही रसिकता थी उनके पास। पुरानी-नयी मराठी कविताओं के साथ-साथ उन्हें अनेक अंग्रेजी कविताएँ भी कंठस्थ थीं। पहले वे एकाध कविता गाकर सुनाते थे-फिर बैठे-बैठे अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते। उसी भाव की किसी अन्य की कविता भी सुनाकर दिखाते। वे स्वयं भी कविता लिखते थे। याद आई तो वे अपनी भी एकाध कविता यह सब सुनते हुए, अनुभव करते हुए लेखक को अपना भान ही नहीं रहता था। लेखक अपनी आँखें और । प्राणों की सारी शक्ति लगाकर दम रोककर मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि, गति आदि पर ध्यान देता था। उससे प्रभावित होकर लेखक भी तुकबंदी करने का प्रयास करता था। अध्यापक लेखक की तुकबंदी का संशोधन करते तथा उसे कविता के लय, छद, अलंकार आदि के बारे में बताते। इन सब कारणों से लेखक के मन में कविताओं के प्रति रुचि जगी।

प्रश्न 4. कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

उत्तर. जब लेखक को कविता के प्रति कोई लगाव नहीं था तो उसे अपना अकेलापन काटने को दौड़ता था। इसी अकेलेपन ने उसके मन पर निराशा की छाया डाल दी थी। इसी कारण वह जीवन के प्रति निर्मोही हो गया था। लेकिन जब उसका लगाव कविता के प्रति हुआ तो उसकी धारणा एकदम बदल गई। उसे अकेलापन अब अच्छा लगने लगा था। वह चाहता था कि कोई उसे कविता रचते समय न टोके। वास्तव में कविता के प्रति लगाव होने के बाद लेखक के लिए अकेलापन ज़रूरी हो गया था। इसी अकेलेपन में वह कविताएँ रच सकता था।

प्रश्न 5. आपके खयाल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ताजी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर. पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक का दृष्टिकोण पढ़ाई के प्रति यथार्थवादी था। उसे पता था कि खेती से गुजारा नहीं होने वाला। पढ़ने से उसे कोई-न-कोई नौकरी अवश्य मिल जाएगी और गरीबी दूर हो जाएगी। वह सोचता भी है-पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे, विठोबा आण्णा की तरह कुछ धंधा-कारोबार किया जा सकेगा। दत्ता जी राव का रवैया भी सही है। उन्होंने लेखक के पिता को धमकाया तथा लेखक को पाठशाला भिजवाया। यहाँ तक कि खुद खर्चा उठाने तक की धमकी लेखक के पिता को दी। इसके विपरीत, लेखक के पिता का रवैया एकदम अनुचित था। उसकी यह सोच, 'तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है। मुझे मालूम है बालिस्टर नहीं होने वाला है तू"-एकदम प्रतिगामी था। वह खेती के काम को ज्यादा बढ़िया समझता था तथा स्वयं ऐयाशी करने के लिए बच्चे की खेती में झोंकना चाहता था।

पाठ 3- अतीत के दबे पाँव

पाठ परिचय नगर बड़े सबसे के सभ्यता घाटी सिंधु में लेखक में पाठ "पाँव दबे के अतीत" – (है स्थित में पाकिस्तान नगर यह बाद के विभाजन) है वर्णन से विस्तार का "मुअनजोदड़ो"। मुअनजोदड़ो ताम्रकालीन सभ्यता का शहर है मे खुदाई की मुअनजोदड़ो ।ं इमारतें की षाणपा-धातु ,कुएं ,सड़कें , प्रतीत ऐसा । हैं मिले खिलौने और सामान-साजो ,मुँहरें ,बर्तन के मिट्टी चित्रित बने पर चाक ,मूर्तियाँ में हैक्टेयर सौ दो लगभग मुअनजोदड़ो । था राजधानी की सभ्यता घाटी सिंधु मुअनजोदड़ो कि है होता जनसंख्या इसकी एवं था हुआ फैलालगभग 50, हुआ बसा पर टीले मकृत्रि मुअनजोदड़ो । थी 000 रहा यह शायद उद्देश्य का बनाने को टीलों इन । है गया बनाया से ईंटों पक्की को टीलों इन । है शहर । पहुँचे न में शहर पानी का नदी सिंधु समय के बाढ़ कि हो

न नगर का मुअनजोदड़ो । है स्तूप बौद्ध पर टीले बड़े सबसे यहाँ◌ियोजन)City Planning (। हैं कहते प्लार्निंग ग्रिड इसे वास्तुकार आधुनिक । आड़ी या हैं सीधी सड़कें सारी यहाँ । है अद्भुत । होगा होता में आयोजन धार्मिक किसी उपयोग जिसका ,है महाकुंड विशाल एक में मुअनजोदड़ो व्यव्यस अद्भुत की निकासी जल – है विशेषता और एक की मुअनजोदड़ो◌्था पानी से घरों यहाँ । । है भी ढंका से ईंटों को नालियों इन और हैं हुईं बनी नालियाँ की ईंटों पक्की लिए के निकालने और बाजरा ,ज्वार ,सरसों ,जौं ,गेहूँ ,कपास में फसल की रबी लोग के यहाँ कि हैं कहते पुरातत्त्वविद क खेती की अंगूर तथा खरबूजे ,खजूर साथ-साथ के रागीरते थे बारिश और कुएँ साधन का सिंचाई । । है हुआ प्रयोग का शब्द "मेलुहा" लिए के मुअनजोदड़ो शायद में सभ्यता मेसोपोटामिया । था जल का । था होता भी काम का रंगाई की कपड़ों यहाँ

पूर्व दिशा में रईसों की बस्ती है ओ दोनों के सडकों । हैं चौडीं सड़कें और बड़े घर पर यहाँ ।र घर हैं में गली ओर दूसरी दरवाजे के घरों बल्कि । खुलता नहीं तरफ की सड़क घर भी कोई किंतु , ,थे भी मंजिला दो घर कई । है व्यवस्था की घरों की तरह इसी भी में चंडीगढ़ में वर्तमान । हैं खुलते के कुँओं ज्यादा से 700 पर यहाँ । थीं नहीं खिड़कियाँ में घरों पर भूतल लेकिनअवशेष भी मिले हैं करना प्रयोग का भूजल जो ,है सभ्यता प्राचीन ऐसी पहली सभ्यता घाटी सिंधु अनुसार के इतिहासकारों । वस्तुओं मिली पर यहाँ । है फीट तीस गुणा फीट तीस लगभग आकार का घरों सामान्य । थी जानती प्रतिकृ की बैलगाड़ी ,मूर्ति की नर्तकी ,मूर्ति की नरेश याजक मेंति विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

यहाँ प्राप्त घरों में खिड़कियाँ और दरवाजों पर छज्जे नहीं है उस कि है चलता पता यह इससे , गैंडे ,हाथी ,शेर पर मुँहरों की मिट्टी प्राप्त से यहाँ ही साथ । होगी रही ठंडी जलवायु की यहाँ समय बत यह जो ,हैं मिले भी चित्र के जानवरों आदि◌ाते हैं कि उस समय यहाँ घने जंगल रहे होगें ।

पाठ में आए प्रमुख कथन एवं उनका अभिप्राय –

1. **सिंधु घाटी सभ्यता में अनुशासन ताकत के बल पर नहीं था** कथन इस) **। था स्वानुशासन यहाँ ,** । मिले नहीं हथियार में मात्रा अधिक भी कहीं में खुदाई की सभ्यता घाटी सिंधु कि है यह आशय का {हैं मिलती में पिरामिड समाधियाँ की राजाओं में मिस्र जैसे} समाधि की राजा बड़ी कोई यहाँ ही साथ अनुमा यह इससे । है मिला स्थल धार्मिक बड़ा कोई ही न और है मिली नहींन लगाया जा सकता है यहाँ की व्यवस्था को चलाने वाला कोई राजतंत्र या धर्मतंत्र नहीं था यहाँ भी बावजूद के सब इस । सकता जा लगाया अनुमान यह उससे ,है मिलती को देखने आदि ,व्यवस्था जल ,योजननि नगर जो पर

। है आवश्यक अनुशासन का नागरिकों सभी लिए के करने कार्य ऐसा कि है राज तंत्र के अभाव में यह अनुशासन अवश्य ही यहाँ के नागरिकों में अपने आप आया होगा कि हैं सकते कह हम तरह इस । । था स्वानुशासन यहाँ ,था नहीं पर बल के ताकत अनुशासन में तासभ्य घाटी सिंधु

2. **सिंधु घाटी सभ्यता एक लो प्रोफाइल सभ्यता थी** सिंध कि है यह आशय का कथन इस) ।ु घाटी सभ्यता में कहीं भी राजाओं के बड़े आदि भवन विशाल ,गहनें अधिक के चाँदी-सोने ,स्थल समाधि बड़े-दिखावा या आडंबर यहाँ में शब्दों दूसरे ,थी संपन्न से साधनों सभी सभ्यता यह भी फिर ,मिले नहीं प्रोफा लो एक सभ्यता घाटी सिंधु कि हैं सकते कह हम से कारण इस । था नहींइल सभ्यता थी ।)

3. **सिंधु घाटी सभ्यता में सुरुचि का ज्यादा महत्त्व था राजपोषित वह लेकिन ,है तो सौंदर्यबोध यहाँ ,** रुचि सुंदर निवासी के सभ्यता घाटी सिंधु कि है आशय का कथन इस) **। है तसमाजपोषि होकर न** कर किया से ढंग सुंदर ही बड़े को कार्य प्रत्येक वे । थे मनुष्य वालेते थे का सभ्यता घाटी सिंधु । ,बर्तन के मिट्टी चित्रित से चित्र के मनुष्यों एवं जानवरों ,नालियाँ हुई ढंकी ,सड़कें ,नगरनियोजन के यहाँ कि हैं सकते कह हम देखकर को आदि गहने ,मूर्तियाँ ,खिलौनेनागरिकों में सौंदर्यबोध था अर्थात सुंदर चीजों का ज्ञान एवं उनके प्रति रुचि थी लेकिन ।यहाँ कोई बड़ी राजा की समाधि मिस्र जैसे} मिला स्थल धार्मिक बड़ा कोई ही न और है मिली नहीं {हैं मिलती में पिरामिड समाधियाँ की राजाओं में बल्कि था नहीं प्रेरित द्वारा की राजा किसी सौंदर्यबोध यह उनका कि है सकता जा कहा यह इससे । है प्रेरित से समाजथा ।)

4. **सिंधु घाटी सभ्यता को जल सभ्यता कहा जा सकता है** सिंधु कि है आशय का कथन इस) **।** थी हुई बसी किनारे के नदी सिंधु यह । है मिलता को खनेदे महत्त्व अत्यधिक का जल में सभ्यता घाटी सभ्यत प्राचीनतम वाली करने उपयोग का भूजल यह तथा हैं मिले कुएँ अधिक से सौ सात यहाँ ।ा है थीं बनी से ईंटों पक्की नालियाँ जिसमें ,है मिलती को देखने व्यवस्था अद्‌भुत की निकासी जल यहाँ । किसी उपयोग जिसका ,है मिला भी महाकुंड विशाल एक यहाँ ही साथ । थी ढंकी ही से ईंटों पक्की और का जल में सभ्यता घाटी सिंधु प्रकार इस । था होता में अनुष्ठान धार्मिकमहत्त्व देखकर हम इसे जल सभ्यता भी कह सकते हैं ।

प्रश्न1. सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था, कैसे?
उत्तर. सिंधु-सभ्यता के शहर मुअनजो-दड़ो की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न-भंडारण व्यवस्था, जल-निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी समझदारी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम-से-कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुत: इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवत: वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।

प्रश्न2. 'सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?
उत्तर. सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था। वास्तुकला या नगर-नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की। मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की

छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्ध से ज्यादा कला-सिद्ध जाहिर करता है। खुदाई के दौरान जो भी वस्तुएँ मिलीं या फिर जो भी निर्माण शैली के तत्व मिले, उन सभी से यही बात निकलकर आती है कि सिंधु सभ्यता समाज प्रधान थी। यह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक थी। इसमें न तो किसी राजा का प्रभाव था और न ही किसी धर्म विशेष का। इतना अवश्य है कि कोई-न-कोई राजा होता होगा लेकिन राजा पर आश्रित यह सभ्यता नहीं थी। इन सभी बातों के आधार पर यह बात कही जा सकती है कि सिंधु सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषित था।

प्रश्न 3. पुरातत्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि-"सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"

उत्तर. सिंधु-सभ्यता से जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उनमें औजार तो हैं, पर हथियार नहीं हैं। मुअनजो-दड़ो, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु-सभ्यता में हथियार उस तरह नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रासाद मिले हैं, न मंदिर, न राजाओं व महतों की समाधियाँ। मुअनजो-दड़ो से मिला नरेश के सिर का मुकुट भी बहुत छोटा है। इन सबके बावजूद यहाँ ऐसा अनुशासन जरूर था जो नगर-योजना, वास्तु-शिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता रखे हुए था। इन आधारों पर विद्वान यह मानते हैं कि यह सभ्यता समझ से अनुशासित सभ्यता थी, न कि ताकत से।

प्रश्न4. 'यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं; वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं, लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।' इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है?

उत्तर. इस कथन के पीछे लेखक का आशय यही है कि खंडहर होने के बाद भी पायदान बीते इतिहास का पूरा परिचय देते हैं। इतनी ऊँची छत पर स्वयं चढ़कर इतिहास का अनुभव करना एक बढ़िया रोमांच है। सिंधु घाटी की सभ्यता केवल इतिहास नहीं है बल्कि इतिहास के पार की वस्तु है। इतिहास के पार की वस्तु को इन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर ही देखा जा सकता है। ये अधूरे पायदान यही दर्शाते हैं. कि विश्व की दो सबसे प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास कैसा रहा।

प्रश्न 5. टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों को भी दस्तावेज़ होते हैं-इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. यह सच है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं। मुअनजो-दड़ो में प्राप्त खंडहर यह अहसास कराते हैं कि आज से पाँच हजार साल पहले कभी यहाँ बस्ती थी। ये खंडहर उस समय की संस्कृति का परिचय कराते हैं। लेखक कहता है कि इस आदिम शहर के किसी भी मकान की दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं चाहे वह एक खंडहर ही क्यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं, रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं या शहर के किसी सुनसान मार्ग पर कान देकर बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं। इस तरह जीवन के प्रति सजग दृष्टि होने पर पुरातात्विक

खंडहर भी जीवन की धड़कन सुना देते हैं। ये एक प्रकार के दस्तावेज होते हैं जो इतिहास के साथ-साथ उस अनछुए समय को भी हमारे सामने उपस्थित कर देते हैं।

प्रश्न 6. नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

उत्तर. सिंधु घाटी सभ्यता में नदी, कुएँ, स्नानागार व बेजोड़ निकासी व्यवस्था के अनुसार लेखक इसे 'जल-संस्कृति' की संज्ञा देता है। मैं लेखक की बात से पूर्णत: सहमत हूँ। सिंधु-सभ्यता को जल-संस्कृति कहने के समर्थन में निम्नलिखित कारण हैं –

- यह सभ्यता नदी के किनारे बसी है। मुअनजो-दड़ो के निकट सिंधु नदी बहती है।
- यहाँ पीने के पानी के लिए लगभग सात सौ कुएँ मिले हैं। ये कुएँ पानी की बहुतायत सिद्ध करते हैं।
- मुअनजो-दड़ो में स्नानागार हैं। एक पंक्ति में आठ स्नानागार हैं जिनमें किसी के भी द्वार एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते। कुंड में पानी के रिसाव को रोकने के लिए चूने और चिराड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है।
- जल-निकासी के लिए नालियाँ व नाले बने हुए हैं जो पकी ईटों से बने हैं। ये ईटों से ढँके हुए हैं। आज भी शहरों में जल-निकासी के लिए ऐसी व्यवस्था की जाती है।
- मकानों में अलग-अलग स्नानागार बने हुए हैं।
- मुहरों पर उत्कीर्ण पशु शेर, हाथी या गैडा जल-प्रदेशों में ही पाए जाते हैं।

अभिव्यक्ति और माध्यम

(प्रस्तुत खंड में से 4*2 और 2*4 इस तरह कुल मिलाकर 16 अंकों के प्रश्न पूछे जाएंगे)

प्रश्न 1. जनसंचार किसे कहते हैं ?

उत्तर. जन – बहुत सारे लोग (Mass) और संचार – विचारों, सूचनाओं और भावनाओं का आदान-प्रदान (Communication) । इस प्रकार किसी औपचारिक तंत्र की सहायता से लोगों के बहुत बड़े समूह के साथ सूचनाओं, भावनाओं और विचारों का आदान-प्रदान जनसंचार है ।

प्रश्न 2. मुद्रित माध्यम के बारे में लिखें ।

उत्तर. मुद्रित माध्यम पुराना माध्यम है । मुद्रण कला की शुरुआत चीन में हुई । छापेखाने के आविष्कार का श्रेय जर्मनी के जोहांस गुटेनबर्ग को जाता है । भारत में पहला छापाखाना पुर्तगालियों द्वारा 1556 में गोवा में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए खोला गया । भारत का पहला समाचार पत्र "बंगाल गजट" था, जो 1780 में कोलकाता से अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हुआ था । इसके संपादक जेम्स आगस्ट हिकी थे । हिंदी का पहला समाचार पत्र उदंत मार्तंड था । यह 1826 में कोलकाता से प्रकाशित हुआ । इसके संपादक पंडित जुगल किशोर शुक्ल थे ।

प्रश्न 3. मुद्रित माध्यम की विशेषताएँ एवं कमियाँ लिखें ।

उत्तर. मुद्रित माध्यम की विशेषताएँ –

- मुद्रित माध्यम एक स्थायी माध्यम है ।
- मुद्रित माध्यम का उपयोग अपनी सुविधानुसार किया जा सकता है ।
- मुद्रित माध्यम से लिखित भाषा का विस्तार होता है ।
- मुद्रित माध्यम चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है ।

मुद्रित माध्यम की कमियाँ –

- निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम उपयोगी नहीं है ।
- मुद्रित माध्यम से तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी नहीं मिलती ।
- मुद्रित माध्यम में शब्द सीमा अथवा स्थान का बंधन होता है ।
- मुद्रित माध्यम में यदि कोई गलत समाचार प्रकाशित हो जाए, तो उसे तुरंत सही नहीं किया जा सकता ।

प्रश्न 4. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की विशेषताएँ एवं कमियाँ लिखें ।

उत्तर. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की विशेषताएँ –

- निरक्षरों के लिए भी इलेक्ट्रॉनिक मुद्रित माध्यम उपयोगी है ।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी भी मिल जाती है ।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में शब्द सीमा अथवा स्थान का कोई बंधन नहीं होता है ।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में यदि कोई गलत समाचार प्रकाशित हो जाए, तो उसे तुरंत सही किया जा सकता ।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की कमियाँ –

- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम स्थायी माध्यम नहीं है ।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग अपनी सुविधानुसार नहीं किया जा सकता है ।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से लिखित भाषा का विस्तार नहीं होता है ।
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम चिंतन, विचार और विश्लेषण के लिए उचित माध्यम नहीं है ।

प्रश्न 5. रेडियो किस प्रकार का माध्यम है ?

उत्तर. रेडियो श्रव्य माध्यम है । इसमें सब कुछ शब्द, ध्वनि और स्वर पर ही आश्रित रहता है ।

प्रश्न 6. "रेडियो एकरेखीय/लीनियर माध्यम है" इस कथन पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर. "रेडियो एकरेखीय माध्यम है" इस कथन का अभिप्राय है कि रेडियो पर प्रसारित सामग्री एक ही दिशा में आगे बढ़ती है । उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति को रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रम में कोई बात समझ में नहीं आए तो सामान्य रूप से वह उस कार्यक्रम को पीछे जाकर पुनः नहीं सुन सकता क्योंकि रेडियो में यह सुविधा नहीं रहती । उससे प्रसारित कार्यक्रम आगे एक ही दिशा में बढ़ते हैं । इसलिए रेडियो को एकरेखीय माध्यम कहते हैं ।

प्रश्न 7. रेडियो के समाचार किस शैली में लिखे जाते हैं ?

उत्तर. रेडियो के समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं ।

प्रश्न 8. रेडियो समाचार की कॉपी तैयार करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर. रेडियो समाचार की कॉपी तैयार करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

1. कॉपी साफ-सुथरी और टाइप्ड होनी चाहिए ।

2. कॉपी ट्रिपल स्पेस में टाइप होनी चाहिए ।

3. ऊपर नीचे पर्याप्त हाशिया होना चाहिए ।

4. एक पंक्ति में अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए ।

5. पंक्ति के अंत में कोई भी शब्द अधूरा नहीं होना चाहिए ।

6. उच्चारण में कठिन एवं संक्षिप्ताक्षरों से बचना चाहिए ।

7. एक से दस तक के अंको को शब्दों में 11 से 999 तक की संख्याओं को अंकों में और इससे बड़ी संख्याओं को शब्दों में ही लिखना चाहिए ।

8. $, % आदि चिह्नों के स्थान पर डॉलर एयर प्रतिशत लिखना चाहिए ।

9. समय बताने के लिए आज शाम, कल दोपहर एवं अगले सप्ताह आदि का प्रयोग होना चाहिए ।

प्रश्न 9. टेलीविज़न पर समाचार लेखन किस प्रकार किया जाता है ?

उत्तर. यद्यपि टेलीविज़न के समाचार भी उल्टा पिरामिड शैली में ही लिखे जाते हैं, तथापि समाचार इस तरह से लिखे जाते हैं कि उनका मेल टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले दृश्यों से बना रहे ।

प्रश्न 10. टेलीविज़न समाचार के विभिन्न चरण कौन से हैं ?

उत्तर . टेलीविज़न समाचार के निम्नलिखित चरण हैं –

1. फ़्लैश न्यूज़ या ब्रेकिंग न्यूज़ – तुरंत घटी किसी महत्त्वपूर्ण घटना को तत्काल कम से कम शब्दों में दर्शकों तक पहुँचाना फ़्लैश न्यूज़ या ब्रेकिंग न्यूज़ है ।

2. ड्राई एंकर- एंकर द्वारा किसी घटना के बारे में सीधे-सीधे दर्शकों को बताना ड्राई एंकर कहलाता है । इसमें घटना से जुड़े दृश्य आदि नहीं दिखाए जाते । मात्र रिपोर्टर से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर घटना की जानकारी दी जाती है ।

3. फोन इन - घटना स्थल पर उपस्थित रिपोर्टर से फोन पर बात करके घटना की जानकारी दर्शकों को देना फोन इन है ।

4. एंकर विजुअल - जब घटना से जुड़े दृश्य मिल जाते हैं, तब उसके आधार पर घटना की जानकारी देना एंकर विजुअल कहलाता है ।

5. एंकर बाईट - घटना को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए घटना के दृश्यों और सूचनाओं के साथ प्रत्यक्षदर्शी या घटना से जुड़े किसी व्यक्ति से बात करके समाचार को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है ।

6. लाइव - घटना स्थल से घटना का सीधा प्रसारण लाइव कहलाता है ।

7. एंकर पैकेज - एंकर पैकेज किसी भी घटना को संपूर्णता से प्रस्तुत करने का तरीका है । इसमें घटना से जुड़े दृश्य, बाइट, ग्राफिक्स आदि होते हैं ।

प्रश्न 11. रेडियो अथवा टेलीविज़न समाचारों की भाषाशैली कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर. रेडियो एवं टेलीविज़न का उपयोग समाज के उच्च शिक्षित वर्ग से लेकर एक अनपढ़ व्यक्ति भी करता है । इस बात को ध्यान में रखकर रेडियो और टेलीविज़न समाचारों की भाषाशैली की निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए -

1. समाचारों की भाषा आम बोलचाल की भाषा होनी चाहिए ।

2. वाक्य छोटे स्पष्ट और सरल हों ।

3. अखबारी भाषा से बचना चाहिए ।

4. भाषा क्लिष्ट एवं अतिरंजित न हो ।

प्रश्न 12. इंटरनेट पत्रकारिता के बारे में लिखें ।

उत्तर. इंटरनेट पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता । वर्तमान में विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है । पहला दौर 1982 से 1992 तक चला । दूसरा दौर 1993 से 2001 चला । औत तीसरा दौर 2002 से अभी तक चल रहा है । पहला प्रयोगों का दौर था । इस दौर में एच.टी.एम.एल., ई मेल आदि का विकास हुआ । भारत में इन्टनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर चल रहा है । भारत में पहला दौर 1993 से शुरू माना जा सकता है । जबकि दूसरा दौर सन 2003 से शुरू हुआ है । भारत में सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता 'रीडिफ डॉटकॉम, इंडियाइंफ़ोलाइन, व् सीफी जैसी कुछ ही साईटें हैं । रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है । वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है ।

प्रश्न 13. पत्रकारिता के क्या क्या कार्य है ?

उत्तर – पत्रकारिता के कार्य सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना आदि हैं ।

प्रश्न 14. पत्रकारीय लेखन क्या है ?

उत्तर – समाचार पत्र या जनसंचार के अन्य माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं । इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं ।

प्रश्न 15. पत्रकार कितनी तरह के होते हैं ?

उत्तर. पत्रकारों के तीन प्रकार हैं –

1. पूर्णकालिक पत्रकार – जो पत्रकार किसी एक समाचार संगठन में वेतन लेकर नियमित रूप से काम करता है, वह पूर्णकालिक पत्रकार है ।

2. अंशकालिक पत्रकार – जो पत्रकार किसी एक समाचार संगठन में कुछ समय निश्चित मानदेय पर काम करता है, वह अंशकालिक पत्रकार है ।

3. फ्रीलांसर – जो पत्रकार भुगतान के आधार पर विभिन्न समाचार संगठनों के लिए काम करता है वह फ्रीलांसर पत्रकार होता है ।

प्रश्न 16. पत्रकारिता का साहित्य से क्या संबंध है अथवा पत्रकारिता और सृजनात्मक लेख में क्या अंतर है ?

उत्तर. ऐसा माना जाता है कि पत्रकारिता जल्दी में लिखा गया साहित्य है । लेकिन पत्रकारिता साहित्य की अन्य विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक आदि से अलग है क्योंकि पत्रकारिता का पूरा संबंध तथ्यों से है, जबकि कहानी, उपन्यास आदि में कल्पना का भरपूर उपयोग होता है । जहाँ एक ओर पत्रकारिता तात्कालिकता और पाठकों की रुचियों और जरूरतों से संबंधित है, वहीं दूसरी ओर साहित्य के रचनात्मक लेखन में इस प्रकार का कोई बंधन नहीं है ।

प्रश्न 17. पत्रकारिता की भाषा कैसी होनी चाहिए अथवा समाचार लेखन की भाषा कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर. किसी समाचार पत्र को एक कम पढ़े लिखे मजदूर से लेकर एक विश्वविद्यालय का कुलपति भी पढता है । इस प्रकार समाचार पत्र का पाठक वर्ग एक विशाल समुदाय होता है । अतः पत्रकारिता की लेखन शैली और भाषा सहज, सरल और रोचक होनी चाहिए, जो आसानी से सभी की समझ में आ जाए । पत्रकारीय लेखन में आलंकारिक और संस्कृतनिष्ठ भाषा के स्थान पर बोलचाल की भाषा का उपयोग होना चाहिए । शब्द सरल और आसान हों । वाक्य छोटे हों तथा जटिल और लंबे वाक्यों से बचना चाहिए । गैरजरूरी विशेषण, जोर्गंस और क्लीशे से बचना चाहिए ।

प्रश्न 18. उलटा पिरामिड शैली को समझाइए ।

उत्तर . उलटा पिरामिड शैली समाचार लेखन की शैली है । इसका विकास अमेरिका में उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान हुआ । इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात यानी क्लाइमेक्स को सबसे पहले बताया जाता है, उसके बाद कम महत्त्वपूर्ण बातों को बताया जाता है । उलटा पिरामिड शैली में समाचार के तीन अंग होते हैं । इंट्रो या मुखड़ा, बॉडी और समापन । इंट्रो में क्या, कौन, कब और कहाँ इन चार ककारों का उत्तर होता है । बॉडी में क्यों और कैसे इन दो ककारों का उत्तर होता है । समापन में अतिरिक्त जानकारी होती है ।

उलटा पिरामिड में समाचार का ढाँचा

प्रश्न 19. समाचार लेखन के छह ककारों को समझाइए ।

उत्तर. जब भी कोई घटना घटित होती है, तो उस घटना के बारे में लोगों के मन में छह प्रश्न उठाते हैं – क्या हुआ ? किसने किया ? कब हुआ ? कहाँ हुआ ? क्यों हुआ ? कैसे हुआ ? इन्हीं छह प्रश्नों को समाचार लेखन में छह ककारों के नाम से जाना जाता है । ये छह ककार हैं – क्या, कौन, कब, कहाँ, क्यों और कैसे । किसी घटना से संबंधित समाचार लिखते समय इन छह ककारों को ध्यान में रखा जाता है । इन छह ककारों में से पहले चार ककार सूचनात्मक और तथ्य पर आचारित होते हैं, बाद के दो ककार विवरणात्मक और व्याख्यात्मक होते हैं । पहले चार ककार इंट्रो और बाद के दो ककार बॉडी में होते हैं ।

प्रश्न 20. फीचर की परिभाषा लिखते हुए फीचर एवं समाचार में अंतर बताइए ।

उत्तर. फीचर – फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है, जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से मनोरंजन करना होता है ।

फीचर	समाचार
फीचर पहले घटी या भविष्य की संभावित घटनाओं से संबंधित भी हो सकते हैं ।	समाचार का संबंध तात्कालिक घटनाओं से होता है ।
फीचर लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती ।	समाचार लेखन की शैली उलटा पिरामिड शैली होती है ।

फीचर में लेखक अपने दृष्टिकोण और विचारों को प्रस्तुत कर सकता है ।	फीचर में लेखक अपने दृष्टिकोण और विचारों को प्रस्तुत कर सकता है ।
फीचर लेखन की भाषा आकर्षक, रूपात्मक और मन को छूने वाली होती है ।	समाचार लेखन की भाषा में सपाटबयानी होती है ।
फीचर समाचारों से अपेक्षाकृत बड़े होते हैं ।	समाचार फीचर की अपेक्षा छोटे होते हैं ।

प्रश्न 21. फीचर कैसे लिखें या अच्छे फीचर की क्या विशेषताएँ हैं ?

उत्तर. फीचर लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

- फीचर में विषय से जुड़े पात्रों की मौजूदगी आवश्यक है ।
- बात को स्वयं कहने की बजाय पात्रों से कहलवाना चाहिए ।
- कहने का अंदाज ऐसा हो कि पात्रों को लगे के वे उस घटना को स्वयं देख या सुन रहे हैं ।
- फीचर को मनोरंजक होने के साथ सूचनात्मक भी होना चाहिए ।
- फीचर में विषय से जुडी जानकारियाँ, विशेषज्ञों के कथन, एवं विषय के विविध पहलू होना चाहिए ।

प्रश्न 22. रिपोर्ट लेखन के प्रकारों को समझाइए ।

उत्तर. गहरी छानबीन करके नए तथ्यों को उजागर करने के लिए किया जाने वाला लेखन रिपोर्ट लेखन हैं । रिपोर्ट चार प्रकार की होती है -

1. खोजी रिपोर्ट - खोजी रिपोर्ट में गहरी छानबीन करके ऐसे तथ्यों को सामने लाने का प्रयास किया जाता है, जो अभी तक जनता के सामने नहीं थे । इस रिपोर्ट का उद्देश्य भ्रष्टाचार आदि को उजागर करना होता है ।
2. इन डेप्थ रिपोर्ट - सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है ।
3. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट - विश्लेषणात्मक रिपोर्ट में ज़ोर किसी घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों के विश्लेषण और व्याख्या पर होता है ।
4. विवरणात्मक रिपोर्ट - विवरणात्मक रिपोर्ट में किसी समस्या या घटना के विस्तृत और बारीक विवरण को प्रस्तुत किया जाता है ।

प्रश्न 23. स्तंभ लेखन क्या है ?

उत्तर. कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपनी ख़ास वैचारिक रुझान एवं लेखन शैली के लिए जाने जाते हैं । ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर समाचार पत्र उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का दायित्व देता है । स्तंभ लेखन में लेखक को विषय का चयन और विचारों को प्रस्तुत करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है । यही कारण हैं कि स्तंभ अपने लेखक के नाम से जाने और पसंद किए जाते हैं । उदाहरण के लिए

दैनिक भास्कर समाचार पत्र में एम. रघुरामन का प्रबंधन से जुडा लेख प्रतिदिन स्तंभ के रूप में प्रकाशित होता है ।

प्रश्न 24. संपादकीय लेख क्या है अथवा संपादकीय लेख क्यों महत्त्वपूर्ण होता है ?

उत्तर. संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय लेख को उस समाचार पत्र की आवाज़ माना जाता है । संपादकीय के माध्यम से समाचारपत्र किसी घटना, समस्या या मुद्दे के बारे में अपनी राय रखता है । संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष की राय न होकर पूरे समाचार संगठन की राय होती है, इसलिए उसे किसी लेखक के नाम से नहीं छापा जाता । संपादकीय लिखने का दायित्व उस समाचार पत्र में काम करने वाले सहायक संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है । बाहर का कोई लेखक या पत्रकार संपादकीय नहीं लिख सकता ।

प्रश्न 25. 'संपादक के नाम पत्र' के महत्त्व पर प्रकाश डालें ।

अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर संपादक के नाम पाठकों के पत्र भी प्रकाशित होते हैं । सभी अखबारों में यह स्थायी स्तंभ होता है । यह पाठकों का अपना स्तंभ होता है । इसमें पाठक समाचार पत्र के बारे में अपनी राय रखने के साथ-साथ विभिन्न समस्याओं को भी उठाते हैं । इस प्रकार यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है । नए लेखकों को लेखन की शुरुआत करने के लिए यह स्तंभ एक अच्छा अवसर प्रदान करता है ।

प्रश्न 26. समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले विशेषज्ञों के लेखों के बारे में लिखें ।

उत्तर. सभी समाचार पत्रों में समसामयिक मुद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों एवं विषय विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित होते हैं । इन लेखों में किसी विषय की विस्तार से चर्चा की जाती है । लेख रिपोर्ट और फीचर से अलग हैं क्योंकि इनमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है । लेकिन ये विचार तथ्यों और सूचनाओं पर आधारित होते हैं । इस प्रकार के लेख लिखने के लिए लेखक को पर्याप्त तैयारी करनी पड़ती है । इस तरह के लेखों के लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं है क्योंकि हर लेखक की अपनी शैली होती है ।

प्रश्न 27. पत्रकारीय लेखन में साक्षात्कार के महत्त्व पर प्रकाश डालें ।

उत्तर . समाचार पत्रों में समाचार, फीचर, लेखा आदि के साथ-साथ साक्षात्कार भी प्रकाशित होते हैं । साक्षात्कार बड़े महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि साक्षात्कार के जरिए ही पत्रकार को समाचार, फीचर, विशेष रिपोर्ट के लिए कच्चा माल मिलता है । साक्षात्कार और सामान्य बातचीत में यह अंतर हैं कि साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से तथ्य, उसकी राय और भावनाओं को जानने के लिए सवाल करता है । एक सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्ता को उस व्यक्ति की पर्याप्त जानकारी होना चाहिए, जिसका साक्षात्कार वह लेने जा रहा है । सफल साक्षात्कारकर्ता बनने के लिए संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण होने चाहिए । साक्षात्कार को प्रश्न-उत्तर या आलेख के रूप में लिखा जा सकता है ।

प्रश्न 28. विशेष लेखन क्या है ?

उत्तर. किसी सामान्य विषय से हटकर किसी ख़ास विषय पर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है । समाचार पत्रों में विशेष लेखन के लिए एक ख़ास डेस्क होता है और उस डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है । उदाहरण के लिए समाचार पत्रों में कारोबार और व्यापार अथवा खेल का अलग डेस्क होता है । डेस्क पर काम करने वाले संबंधित विषय के विशेषज्ञ होते हैं ।

प्रश्न 29. बीट रिपोर्टिंग क्या है ?

उत्तर. समाचार पत्र में खेल, अपराध, फैशन, राजनीति आदि कई तरह के समाचार छपते हैं । पत्रकारों की रुचि और उनके ज्ञान के आधार पर किया गया कार्य का विभाजन बीट कहलाता है । जैसे जिस पत्रकार को खेल की बीट मिली है वह खेल के समाचार ही कवर करेगा ।

प्रश्न 30. विशेषीकृत रिपोर्टिंग क्या है ?

उत्तर. विशेषीकृत रिपोर्टिंग में किसी खास विषय या क्षेत्र से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों, और समस्याओं का विश्लेषण करके उन्हें पाठकों को समझाने की कोशिश की जाती है । विशेषीकृत रिपोर्टिंग से जुड़ी कुछ खास बातें निम्नलिखित हैं –

विशेषीकृत रिपोर्टिंग में किसी खास विषय की पूरी जानकारी दी जाती है । साथ ही उस विषय से जुड़े मुद्दों और समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है ।

विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सटीक और विश्वसनीय जानकारी दी जाती है तथा इसका इस्तेमाल अक्सर समाचार लेखन, अकादमिक लेखन, तकनीकी लेखन, और अन्य औपचारिक लेखन शैलियों में किया जाता है ।

प्रश्न 31. विशेषीकृत रिपोर्टिंग की भाषा की क्या विशेषता है ?

उत्तर. विशेष लेखन की भाषा भी सरल, सहज और आसानी में समझ में आने वाली होनी चाहिए । किंतु प्रत्येक क्षेत्र की अपनी शब्दावली होती है अतः उस शब्दावली का ज्ञान विशेष संवाददाता को अवश्य होना चाहिए ।

प्रश्न 32. विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए विशेषज्ञता कैसे प्राप्त करें ?

उत्तर. जैसा कि हम जानते हैं कि विशेषीकृत पत्रकारिता के लिए विशेषज्ञता आवश्यक है । विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं –

- विषय का माध्यमिक एवं स्नातक स्तर तक अध्ययन करें ।
- विषय से संबंधित पुस्तकें खूब पढ़ें ।
- विषय से जुडी खबरों एवं रिपोर्टों की कटिंग करके फाइल बनाएँ ।
- उस विषय का शब्दकोष या इनसाइक्लोपीडिया अपने पास रखें ।
- उस विषय से जुडी संस्थाओं की जानकारी रखें ।
- उस विषय के विशेषज्ञों से मिलें ।

प्रश्न 33. बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है ?

उत्तर. बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में निम्नलिखित अंतर है –

बीट रिपोर्टिंग	विशेषीकृत रिपोर्टिंग
बीट रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता कहलाता है ।	विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला विशेष संवाददाता कहलाता है ।
बीट रिपोर्टिंग की ज़िम्मेदारी क्षेत्र में रुचि और क्षेत्र के ज्ञान के आधार पर दी जाती है ।	विशेषीकृत रिपोर्टिंग की ज़िम्मेदारी उस क्षेत्र की विशेषज्ञता होने पर ही दी जाती है ।
बीट रिपोर्टिंग में विषय की सामान्य जानकारी दी जाती है ।	विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय के विभिन्न पहलुओं जैसे कारण, हानि, लाभ, प्रभाव आदि की गहराई से जानकारी दी जाती है ।

प्रश्न 34. विशेष लेखन के क्षेत्र कौन-कौन से हैं ?

उत्तर. अर्थ-व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फ़िल्म-मनोरंजन, अपराध, सामाजिक मुद्दे,क़ानून आदि ।

प्रश्न 35. अप्रत्याशित लेखन के संदर्भ में रटंत का क्या तात्पर्य है ? लेखन के क्षेत्र में यह किस प्रकार हानिकारक है ?

उत्तर. अप्रत्याशित लेखन के संदर्भ में रटंत का अर्थ है, दूसरों द्वारा तैयार की गई सामग्री को याद करके ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने की कुटेव (बुरी आदत) । इस बुरी आदत का शिकार हो जाने पर व्यक्ति तैयारशुदा सामग्री पर निर्भर हो जाता है और इससे उसकी मौलिक प्रयास करने की क्षमता और अभ्यास बाधित होने लगते हैं । कुल मिलाकर वह व्यक्ति अपने अंदर की लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित नहीं कर पाता । इसलिए व्यक्ति को रटंत की बुरी आदत को छोड़कर नित नए विषयों पर लेखन का अभ्यास करना चाहिए ।

प्रश्न 36. अप्रत्याशित लेखन में 'मैं' शैली के प्रयोग के बारे में लिखें ।

उत्तर. अप्रत्याशित लेखन के संदर्भ में यह बात उल्लेखनीय है कि सामान्य रूप से निबंध आदि में 'मैं' शैली का प्रयोग वर्जित होता है, वहीं अप्रत्याशित लेखन में ' मैं' शैली का प्रयोग बेरोकटोक हो सकता है । यहाँ वर्णित विचारों में आत्मनिष्ठता और लेखक के व्यक्तित्व की छाप होगी । इसलिए अन्यत्र वस्तुनिष्ठता के आग्रह से 'मैं' शैली को भले ही ठीक न माना जाता हो, यहाँ उस पर कोई प्रतिबंध नहीं होता ।

प्रश्न 37. कहानी और नाटक में क्या समानताएँ हैं ?

उत्तर. कहानी और नाटक दोनों में ही एक कथानक होता है, पात्र होते हैं, परिवेश होता है, कहानी का क्रमिक विकास होता है, संवाद होते हैं, द्वंद्व होता है, चरम उत्कर्ष होता है ।

प्रश्न 38. कहानी और नाटक में क्या असमानताएँ हैं ?

उत्तर. कहानी और नाटक में निम्नलिखित असमानताएँ हैं –

कहानी और नाटक में असमानताएँ –

कहानी	नाटक
कहानी का संबंध लेखक और पाठक से है ।	नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, पात्र, श्रोता, दर्शक आदि से है ।
कहानी कही या पढी जाती है ।	नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है ।
कहानी में मंच सज्जा संगीत आदि नहीं होते	नाटक में मंच सज्जा संगीत आदि होते हैं ।

प्रश्न 39. कहानी को नाटक में बदलने की क्या प्रक्रिया हैं ?

उत्तर. **कहानी को नाटक को बदलने की प्रक्रिया –**

➢ कहानी को नाटक में बदलने के सबसे पहले चरण में दृश्यों का निर्माण किया जाता है । कहानी में हो घटनाएँ एक समय पर और एक स्थान पर होती हैं, उनके आधार पर एक दृश्य का निर्माण कर लिया जाता है । दृश्यों का निर्माण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे दृश्य उबाऊ या अनावश्यक न हों । नाटक के प्रत्येक दृश्य में आदि मध्य और अंत होता है । इस प्रकार दृश्य कथानक को आगे बढ़ाने के साथ-साथ पात्रों के संवादों के माध्यम से परिवेश को स्थापित करती है ।

➢ दृश्यों के निर्माण के बाद कहानी में परिवेश आदि में की गई जिन टिप्पणियों का दृश्यों में रूपांतरण नहीं हो सकता, उन्हें मंच सज्जा या पार्श्व संगीत आदि के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है । विवरण यदि पात्रों के बारे में है तो उन्हें संवादों या पात्रों की वेशभूषा के माध्यम से दिखाया जा सकता है ।

➢ कहानी के मूल संवाद यदि पर्याप्त न हो, तो नाट्य रूपांतरण करते समय कुछ अन्य संवाद जोड़े जा सकते हैं । लेकिन यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि नए जोड़े गए संवाद मूल संवादों से मिलते-जुलते हों । कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण करते समय छोटा करके अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है ।

➢ कहानी में वर्णित पात्रों के चरित्र चित्रण को नाट्य रूपांतरण करते समय पात्रों की वेशभूषा और अभिनय आदि के माध्यम से बताया जा सकता है । ध्वनि एवं प्रकाश भी संवेदनात्मक प्रभावों को उत्पन्न कर सकते हैं ।

➢ कहानी में वर्णित पात्रों के मनोभावों और अंतर्द्वंद्व को नाट्य रूपांतरण में स्वगत कथन और वॉयस ओवर द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है ।

प्रश्न 40. रेडियो नाटक की लोकप्रियता के क्या कारण हैं ?

उत्तर. आज के कुछ दशक पहले एक समय था, जब दुनिया में न टेलीविज़न था, न कंप्यूटर । सिनेमा हाल थे लेकिन वे भी बहुत कम । इस स्थिति में घर बैठे मनोरंजन प्राप्त करने का एक मात्र सहजता से

मिलने वाला साधन था रेडियो । रेडियो पर समाचारों के साथ-साथ अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम भी आते हैं । साथ ही इन सभी कार्यक्रमों का आनंद अन्य कार्य करते हुए भी लिया जा सकता है ।

प्रश्न 41. रेडियो नाटक क्या है ?

उत्तर. रेडियो पर केवल संवादों एवं ध्वनि प्रभावों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने वाला नाटक रेडियो नाटक कहलाता है । इसे केवल सुना जा सकता है । मोहन राकेश का 'आषाढ़ का एक दिन' और धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' रेडियो नाटक के श्रेष्ठ उदाहरण हैं ।

प्रश्न 42. रेडियो नाटक और सामान्य नाटक में क्या समानताएँ होती हैं ?

उत्तर. रेडियो नाटक और सामान्य नाटक दोनों में ही एक कथानक होता है, पात्र होते हैं, संवाद होते हैं, कथा का क्रमिक विकास होता है, द्वंद्व होता है और अंत में चरमोत्कर्ष होता है ।

प्रश्न 43. रेडियो नाटक और सामान्य नाटक में क्या अंतर होते हैं ?

उत्तर. रेडियो नाटक और सामान्य नाटक में निम्नलिखित अंतर हैं –

रेडियो नाटक	सामान्य नाटक
1. रेडियो नाटक में सिर्फ श्रव्यता रहती है ।	1. सामान्य नाटक में श्रव्यता के साथ दृश्य भी होते हैं ।
2. रेडियो नाटक में मात्र संवाद और ध्वनि प्रभावों का महत्त्व है ।	2. सामान्य नाटक में संवाद और ध्वनि प्रभावों के साथ मंचसज्जा, वेशभूषा, अभिनय आदि का भी महत्त्व है ।
3. रेडियो नाटक की कहानी एक्शन पर आधारित नहीं चाहिए ।	3. सामान्य नाटक की कहानी एक्शन पर आधारित हो सकती है ।
4. रेडियो नाटक की अवधि कम होती है ।	4. सामान्य नाटक की अवधि बड़ी होती है ।
5. रेडियो नाटक में पात्र कम होते हैं ।	5. सामान्य नाटक में पात्र अपेक्षाकृत अधिक होते हैं ।

प्रश्न 44. रेडियो नाटक में संवाद और ध्वनि प्रभाव के महत्त्व के बारे में लिखें ।

उत्तर . सामान्य नाटक में जो बातें, मंचसज्जा, वेशभूषा, अभिनय आदि से प्रस्तुत की जाती हैं, वे बातें भी रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभाव और संवादों से प्रस्तुत करनी होती हैं, इस कारण से रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभाव और संवादों का महत्त्व और भी बढ़ जाता है । उदाहरण के लिए नाटक में घटना के स्थान और समय को बताने के लिए किसी पात्र के 'कितना डरावना जंगल है' और 'काली रात है' जैसे संवादों का महत्त्व बढ़ जाता है । इसी प्रकार रात्रि की भयावहता और पात्रों के मनोभावों को भी ध्वनि प्रभावों के माध्यम से बताया जा सकता है । इस प्रकार रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभाव और संवाद ही सबसे महत्त्वपूर्ण हैं ।

प्रश्न 45. रेडियो नाटक की कहानी कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर. रेडियो नाटक की कहानी एक्शन पर आधारित नहीं चाहिए क्योंकि इस तरह की कहानी को रेडियो पर केवल संवाद और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से नहीं दिखाया जा सकता और इस तरह की कहानी पर आधारित रेडियो नाटक उबाऊ हो जाएगा ।

प्रश्न 46. रेडियो नाटक की अवधि के बारे में लिखें ।

उत्तर. रेडियो नाटक में सिर्फ संवाद और ध्वनि प्रभाव रहते हैं । इस तरह के नाटक का सुनकर आनंद लेने के लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है । मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15-20 मिनिट ही होती है । इसके बाद वह मनुष्य ऊबने लगता है । इस कारण से रेडियो नाटक की अवधि 15-20 मिनिट से अधिक नहीं होनी चाहिए । यदि रेडियो नाटक बड़ा है तो उसे धारावाहिक के रूप में दिखाना चाहिए ।

प्रश्न 47. रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या के बारे में लिखें ।

उत्तर. रेडियो नाटक में श्रोता को केवल सुनकर ही सारे नाटक को समझना होता है और पात्रों को याद रखना होता है । यदि रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होगी तो न तो श्रोता पात्रों को याद रख पाएगा और न ही वह नाटक का मर्म समझ पाएगा । अतः 15-20 मिनिट के रेडियो नाटक में मुख्य पात्रों की संख्या 5-6 ही होनी चाहिए ।

प्रश्न 48. रेडियो नाटक में संवादों से क्या जानकारी मिलती है ?

उत्तर. नाटक में घटना कब और कहाँ हो रही हैं ? नाटक के पात्रों की पृष्ठभूमि कैसी है, पात्रों का व्यक्तित्व कैसा है ? उसका अन्य पात्रों से कैसा संबंध है ? वह नाटक में कितना महत्त्वपूर्ण है ? आदि महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ हमें संवादों से ही प्राप्त होती हैं ।